✶ वर्ष 43 ✶ अंक 7 ✶ जुलाई 2016 ₹15/-

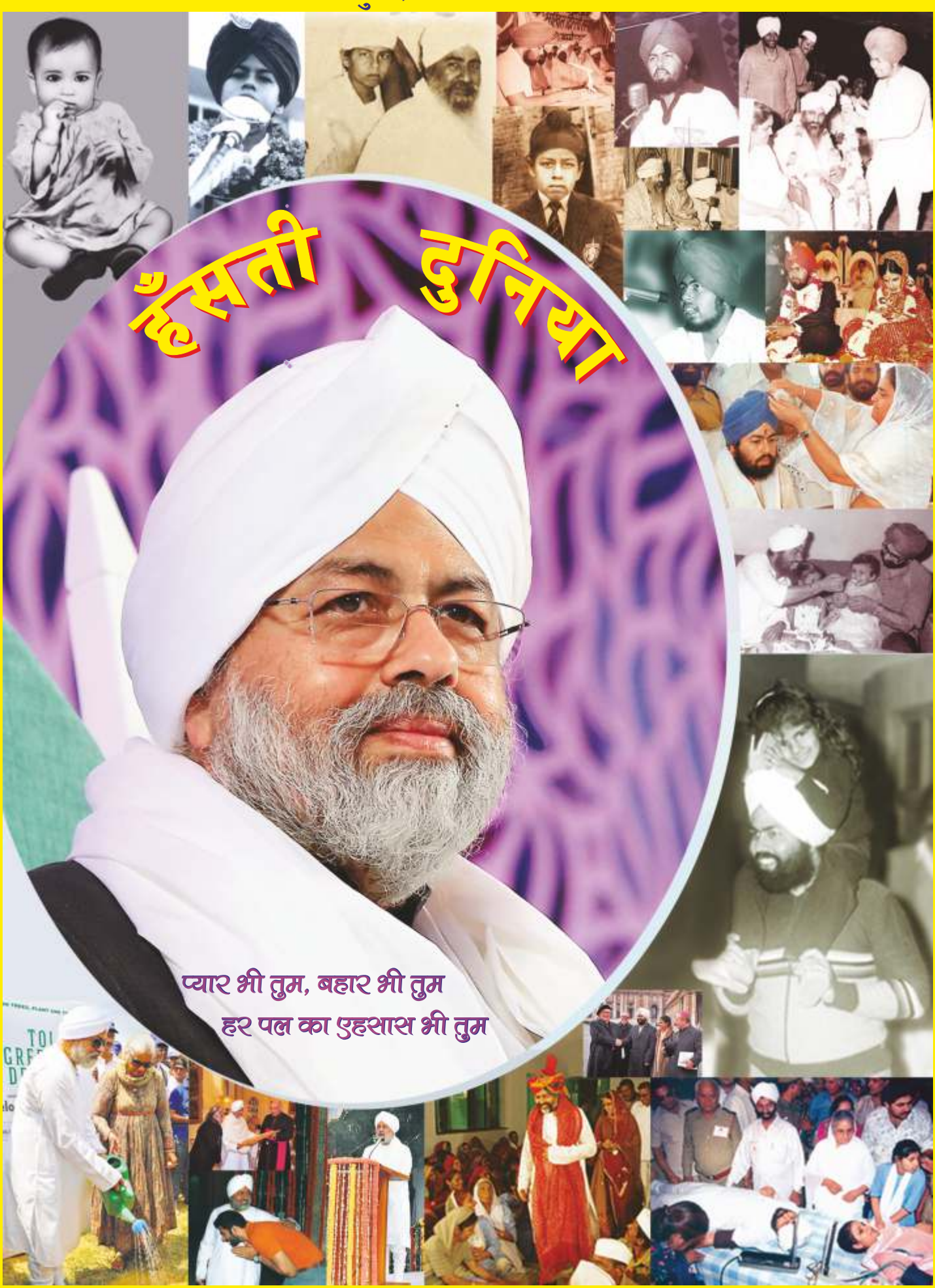

हँसती दुनिया

• वर्ष 43 • अंक 7 • जुलाई 2016 • पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries

Equivalent to U.S. Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

10 अनमोल वचन
20 वर्ग पहेली
23 सम्पूर्ण अवतार बाणी
44 पढ़ो और हँसो
46 जन्मदिन मुबारक
47 आपके पत्र मिले
48 रंग भरो परिणाम
50 चित्र पहेली

चित्रकथाएं

12 दादा जी
34 किट्टी

कविताएं

11. जनसंख्या विस्फोट
: डॉ० परशुराम शुक्ल

16. मेघ निराले
: श्यामसुन्दर श्रीवास्तव

16. काले बादल आये
: राजन श्रीवास्तव

25. वर्षा रानी आई है
: भानुदत्त त्रिपाठी

39. वर्षा जल
: कमल सिंह चौहान

43. बादल आए झूम के
: गफूर स्नेही

कहानियां

17. अद्भुत धैर्य, अपार सहनशक्ति
: राधेलाल 'नवचक्र'

21. जमकर खेलो
: डॉ० राजीव गुप्ता

27. मित्र हो तो ऐसा
: रूपनारायण काबरा

29. सुन्दरता
: महेन्द्र सिंह शेखावत

30. ज्ञान
: प्रियंका चोटिया

31. सच्ची मित्रता
: ओमदत्त जोशी

41. जीवन मूल्य
: राजेश अरोड़ा

विशेष / लेख

4. तुम तो प्यार हो ...
: विमलेश आहूजा

6. युगदृष्टा, सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी

9. माता सविन्दर जी
सन्त निरंकारी मिशन की सद्गुरु

19. शान्ति निकेतन का वृक्षारोपण पर्व
: श्यामसुन्दर गर्ग

24. भाँति–भाँति के मेंढ़क
: विद्या प्रकाश

26. 'वर्ल्ड हेल्थ आर्गनाईजेशन'
: विभा वर्मा

26. बौना सूअर
: विद्या प्रकाश

28. ग्लूकोज क्या होता है?
: विभा वर्मा

29. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: विभा वर्मा

30. टीशर्ट से चार्ज होंगे मोबाईल
: किरण बाला

38. फूल भी खिलते हैं कैक्टस में
: ईलू रानी

40. रोबोट पुलिस
: किरण बाला

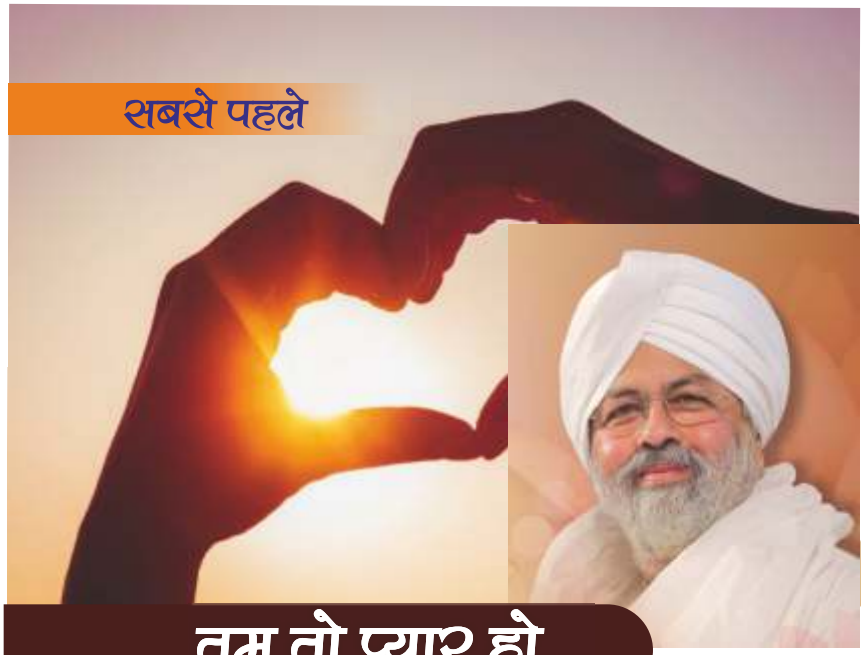

तुम तो प्यार हो...

संसार में कुछ ही ऐसे अद्‌भुत एवं अभूतपूर्व व्यक्तित्व इस धरा पर अवतरित हुए हैं, जो जन्म से मृत्यु तक सदा एकचित रहे, लाभ या हानि उन पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकी। यश की असीम ऊँचाईयों में भी तटस्थ और सुख–दुःख से ऊपर उठकर जीवन को एकरसता से जिया और सारे मानव समाज को इसी तरह जीने की प्रेरणा भी दी।

ऐसा ही दुर्लभ व्यक्तित्व 23 फरवरी 1954 को बाबा गुरबचन सिंह जी महाराज एवं राजमाता कुलवन्त कौर जी के घर दिल्ली में एक शिशु रूप में पैदा हुआ। उस समय वह शिशु एक बीज रूप में विशाल वृक्ष की तरह अद्वितीय, असीमित उपलब्धियों को समाहित किए हुए था। इसका अनुमान शायद किसी को भी नहीं था। बाल अवस्था में ही उनके मधुर, सरल स्वभाव के कारण सभी प्यार से उन्हें 'भोला' कहकर पुकारने लगे। आपके स्वभाव में बचपन से ही सहजता, सरलता, निर्लेपता, सबका भला करना और मितभाषी आदि गुण समाहित थे। आप प्यार की साक्षात् जीती–जागती मिसाल थे।

उस समय यह कोई नहीं जानता था कि ये बालक एक दिन सन्त निरंकारी मिशन की बागडोर सम्भालेंगे और सारी मानवता को प्यार के धागे में पिरोकर एक परिवार की तरह रहना सिखाएंगें। आपका प्यार, दुलार और करुणा से सभी की बातों को गौर से सुनना आपके प्रति आकर्षण का केन्द्र बन गया था। मृदु मुस्कान से ही आप सभी के मन की पीड़ा को दूर करने में सक्षम थे। आपने अपनी विचारधारा को सम्पूर्ण मानव समाज और जन–जन अर्थात् समस्त मानव जाति को अपने स्पष्ट, स्टीक, साधारण और मीठे शब्दों के उद्‌बोधन से प्रेरित किया।

आपने अपनी बात को शब्दों से अधिक कर्म में अपनाने पर जोर दिया। परमपिता परमात्मा की जानकारी अर्थात् निराकार के ज्ञान को हर व्यक्ति तक पहुँचाना और उसका एहसास कराना आपका परम लक्ष्य था। आपने इसके प्रचार–प्रसार में अपने तन–मन को लगा दिया। आपकी मधुर मुस्कान एवं दृष्टि पाने के लिए लाखों का जनसमूह आपकी प्रतीक्षा करता रहता था। आपको लाखों लोगों का प्यार मिला क्योंकि आपने सभी को प्यार ही दिया था। आपके प्रेम और प्यार की सुगन्ध ने हर वर्ग, जाति और विभिन्न संस्कृति के लोगों को आकर्षित और मन्त्रमुग्ध किया हुआ था।

आपने हमेशा एकत्व की बात की और संसार में विभिन्न प्रकार की नकारात्मक भावनाओं को समाप्त कर सकारात्मक दिशा में कदम बढ़ाने की

हमेशा चर्चा थी। आपकी आकांक्षा थी कि विश्व में किसी मज़हब, धर्म, रंग, भेद की दीवारें न हों और हम सभी एकत्व से मानवता की ओर अग्रसर हों। ऐसे महात्मा युगदृष्टा कोई और नहीं हमारे हृदय सम्राट सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज हैं।

आपका अवतरण उस समय हुआ जब बाबा गुरबचन सिंह जी जो आपके पिता भी थे, ने अपना बलिदान (24 अप्रैल,1980 को) मानव को मानवता में परिवर्तित करने में दिया।

27 अप्रैल, 1980 को पहली बार आपने सद्गुरु रूप में आपने भक्तों को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमें सभी को शान्त एवं मौन रहकर निराकार की रज़ा (भाणे) को मानना चाहिए। आपने मानव समाज को प्यार, अहिंसा, सहनशीलता, करुणा, सद्भाव, एकत्व एवं मानवता, सभी सद्गुणों को अपनाने का संदेश दिया।

आपने 36 वर्ष तक सद्गुरु रूप में दिये प्रवचनों में बहुत साधारण–सी भाषा में सन्देश दिये– 'मन का प्रदूषण अधिक हानिकारक है किसी भी और प्रदूषण से', 'एक को जानो, एक को मानो, एक हो जाओ' आपने सभी को समझाया कि हम सभी निराकार–परमात्मा की सन्तान हैं और हम सभी आत्म रूप से एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं। इसीलिए आपसी भाईचारा हमारा अभिन्न अंग है।

आपने अनेकों सामाजिक कार्यों में भी बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने के लिए अनुयायियों को प्रेरित किया। सारे विश्व में रक्तदान शिविर लगाए, स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण, सामूहिक सादा–शादियां, नशाबन्दी आदि अनेकों कार्यक्रमों ने मिशन को चरमोत्कर्ष पर पहुँचा दिया।

आपने हर व्यक्ति को परमात्मा का ज्ञान प्रदान कर आशीर्वाद ही दिया। आपकी प्यार भरी वाणी को सुनने के लिए और आपकी प्रत्यक्ष झलक पाने के लिए हर कोई बेताब रहता था। आपका विश्वास था कि हर कार्य प्रेम से किया जा सकता है। प्रेम शक्ति है, प्यार जीने का एक तरीका है। आपकी अलौकिक छवि हर हृदय में समाहित है क्योंकि आप स्वयं केवल 'प्रेम अर्थात् प्यार' हैं। साकार का महत्व हमेशा होता है आपके साकार रूप को हम हमेशा देखते और अनुभव करते रहें।

13 मई, 2016 को, कनाडा में आप निराकार–परमात्मा में साकार से हटकर केवल निराकार ही हो गए। आपने 36 वर्षों में जो प्रवचन दिए वही हमें आज जीवन जीने की कला और कैसे गुरसिक्ख को जीना चाहिए का पाठ पढ़ाएंगें। आप हमारे हृदयों में हमेशा रहेंगे, जब तक हमारा अस्तित्व रहेगा आप हमारे साथ रहेंगे। आपके प्रवचनों को जीवन में ढालकर व अपनाकर एवं उन पर आचरण करना ही आपके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धा होगी।

आप हमसे जुदा नहीं हुए हम ही आप से जुदा हो गए। आप तो यहीं हो, हम ही आपको नहीं समझ पा रहे। आप तो सबको प्यार का सन्देश देते–देते खुद ही प्यारमय हो गए। ज्ञान तो यही कहता है कि आप साकार–निराकार से निराकार हो गए परन्तु हमें साकार की कमी का एहसास आपके साकार रूप से निराकार में जाने से ही हुआ और रहेगा, क्योंकि....

तुम तो प्यार हो.....
हमें तुमसे प्यारा और न कोई....
तुम तो प्यार हो....

हमारी प्रार्थना, हमें भी प्रेममय बना दो, ताकि हमारा मिशन कामयाब हो।

– विमलेश आहूजा

युगदृष्टा, सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज

बाबा हरदेव सिंह जी का जन्म 23 फरवरी, 1954 को दिल्ली में बाबा गुरबचन सिंह जी और राजमाता कुलवन्त कौर जी के घर में हुआ। बाबा हरदेव सिंह जी को बचपन से ही माता–पिता और दादा–दादी युगपुरुष बाबा अवतार सिंह जी एवं जगतमाता बुद्धवन्ती जी से दिव्य–संस्कार तथा आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

बाबा हरदेव सिंह जी ने प्रारम्भिक शिक्षा रोज़री पब्लिक स्कूल, दिल्ली, माध्यमिक शिक्षा यादवेन्द्र पब्लिक स्कूल, पटियाला एवं उच्चत्तर शिक्षा, दिल्ली में प्राप्त की।

आप अपने सहयोगी और करुणा भरे स्वभाव से शिक्षकों और सहपाठियों के बीच अत्यधिक लोकप्रिय हो गए। आप खेल, घुड़सवारी और पर्वतारोहण के साथ फोटोग्राफी में भी पर्याप्त रुचि रखते थे। सत्संग, सेवा, सुमिरण के साथ–साथ आप मिशन के सामाजिक–आध्यात्मिक कार्यों में गहरी रुचि लेते थे। आपके विनम्र स्वभाव के कारण आपको 'भोला जी' कह कर भी पुकारा जाता था। पांच भाई बहनों में आपके अलावा चार बहनें निरंजन जी, मोहिनी जी, जगजीत जी एवं बिंदिया जी हैं।

सन् 1971 में, आप सन्त निरंकारी सेवादल के सदस्य बने। सन् 1975 में आपने 'निरंकारी यूथ फोरम' की स्थापना की जो 'सादा जीवन, उच्च विचार' के भाव से समाज कल्याण कार्यों को प्रोत्साहन देने पर केन्द्रित थी। आप इस फोरम के अध्यक्ष भी रहे।

सन् 1975 में दिल्ली में आपका विवाह फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) के श्री गुरुमुख सिंह जी और श्रीमती मदन जी की सुपुत्री सविन्दर जी से एक सादा समारोह में हुआ, जिन्हें निरंकारी जगत पूज्य माता जी के नाम से सम्बोधित करता है। पूज्य माता जी उच्च शिक्षित और अपने सामाजिक एवं आध्यात्मिक कर्तव्यों के प्रति जागरूक हैं। आपकी तीन सुपुत्रियाँ हैं–समता जी, रेणुका जी एवं सुदीक्षा जी।

आप युगप्रवर्तक बाबा गुरबचन सिंह जी को सद्गुरु रूप में सम्मान देते थे और उनकी सेवा में अपने आपको समर्पित किये रहते थे। देश एवं दूर–देशों की मानव कल्याण यात्राओं में आप एक अनन्य भक्त एवं सेवादार के रूप में सम्मिलित रहते थे।

बाबा गुरबचन सिंह जी के मार्गदर्शन में सन्त निरंकारी मिशन के बढ़ते प्रचार–प्रसार को कुछ

भ्रमित मानसिकता वाले लोगों द्वारा समय–समय पर बाधित करने के प्रयास किये जाते रहे और अंततः 24 अप्रैल, 1980 को बाबा गुरबचन सिंह जी ने मानवता की खातिर अपना बलिदान दिया।

उस समय युवा हरदेव जी ने न केवल अपना सद्गुरु खोया था अपितु अपने पिता को भी गंवाया था। यह वो समय था जब मिशन के अनुयायियों के धैर्य, सहनशीलता और सब्र की महत्वपूर्ण परीक्षा थी। यह मिशन के भविष्य के लिए बहुत बड़ी चुनौती का समय था।

बाबा गुरबचन सिंह जी के बलिदान के उपरान्त बाबा हरदेव सिंह जी 27 अप्रैल 1980 को सद्गुरु रूप में प्रकट हुए और अपनी अलौकिक दिव्य वाणी से आक्रोशित जनसमूह को शान्त कर श्रद्धाँजलि समारोह में उपस्थित श्रद्धालुओं को आपने इस प्रकार सम्बोधित किया– "साध संगत! उस महात्मा का सारा जीवन पूरी इन्सानियत का भला मांगने व भला करने में लगा। आज हम कहते हैं कि उनकी हत्या कर दी गई है। यह उनकी हत्या नहीं हुई, बल्कि "तेरे भाणे सरबत का भला" के विचारों की हत्या हुई है। यह भाई कन्हैया जी की भावना की हत्या हुई है। बाबा गुरबचन सिंह जी को कोई नहीं मार सकता।"

किसी भी प्रकार की बदले की भावना को नकारते हुए आपने कहा कि ऐसी कोई भी विपरीत भावना, बाबा गुरबचन सिंह जी के जीवन तथा बलिदान के विपरीत होगी। आपने मिशन के अनुयायियों को दया, सद्भाव, प्रेम और सत्य के संदेश को प्रसारित करने का आहव्वान किया और प्रत्येक मानव के भले की कामना की। जब आपने मिशन की यह जिम्मेदारी संभाली तब से निरंकारी राजमाता जी ने अपने जीवन के अंतिम श्वांस तक कदम–कदम पर आपका साथ निभाया। देश ही नहीं अपितु विश्व कल्याण यात्राओं में भी सहभागी रहीं।

सद्गुरु रूप में बाबा हरदेव सिंह जी का वर्ष 1980 में वार्षिक सन्त–समागम निरंकारी मिशन का ऐतिहासिक समागम था क्योंकि इसी वर्ष श्रद्धालु–भक्तों को युगदृष्टा, सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी की रहनुमाई प्राप्त हुई।

मानव एकता की स्थापना का भाव आपके हृदय में इतना सुदृढ़ था कि वर्ष 1981 में सद्गुरु बाबा गुरबचन सिंह जी की याद को समर्पित समागम को आपने 'मानव एकता दिवस' का स्वरूप प्रदान कर दिया। तब से हर वर्ष यह दिवस इसी रूप में मनाया जाता है।

बाबा गुरबचन सिंह जी की स्मृति को चिर स्थायी बनाने के लिए वर्ष 1986 में आपने मानवता को एक नई दिशा प्रदान की। 'रक्त नालियों में नहीं, नाड़ियों में बहना चाहिए' आपके इस सन्देश को निरंकारी श्रद्धालुओं ने हृदय की गहराईयों से स्वीकार किया और तब से निरंतर हर वर्ष विश्व भर में रक्तदान कर हजारों लोगों को जीवनदान देने का अनुकरणीय कार्य किया जा रहा है। वर्ष 2016 में मुम्बई में प्रथम ब्लड–बैंक का आपके द्वारा उद्घाटन किया गया जो बाबा गुरबचन सिंह जी के स्वप्न को ही साकार करता है।

पर्यावरण की शुद्धता के प्रति मानव–मात्र को जागरूक करने के लिए आपने 'प्रदूषण अन्दर हो या बाहर, हानिकारक है' का न केवल सन्देश दिया बल्कि देश–विदेश में वृक्षारोपण एवं स्वच्छता अभियान की शुरूआत कर इसे क्रियात्मिक रूप भी प्रदान किया। तब से आपके जन्म दिवस 23 फरवरी को विश्व भर में स्वच्छता अभियान निरंतर जारी है।

बाबा अवतार सिंह जी द्वारा स्थापित निरंकारी सरोवर परिसर को आपने अपने समय में ऐसा सुन्दर स्वरूप प्रदान किया कि यह स्थल दिल्ली सरकार ने अपने पर्यटन मानचित्र में शामिल कर

लिया है। मिशन के आरम्भ से अब तक की गतिविधियों एवं विस्तार को दर्शाने हेतु इसी परिसर में आधुनिक तकनीक पर आधारित 'दिव्य–यात्रा संग्रहालय' (Divine Journey Museum) स्थापित किया।

विश्व में एकत्व के भाव को साकार करते हुए आपने इसी परिसर में भव्य संगीतमय 'एकत्व के फव्वारे' का निर्माण करवाया जो जनसाधारण के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

सत्य के प्रचार–प्रसार हेतु आपने हर उस साधन का प्रयोग किया जो समय की आवश्यकता के अनुरूप उपलब्ध हुआ। मिशन द्वारा प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं एवं साहित्य को नया स्वरूप प्रदान किया।

युवा वर्ग को अध्यात्म की धारा से जोड़ने के लिए आप निरंतर प्रयासरत रहे। मिशन के प्रचार व प्रबन्ध कार्यों में युवाओं की उचित भागीदारी सुनिश्चित की। परिणामस्वरूप हर स्थान पर युवा वर्ग आपके मार्गदर्शन में अध्यात्म के साथ–साथ समाज कल्याण कार्यों में भी निरंतर संलग्न हैं।

आपके दिव्य व्यक्तित्व, सकारात्मक विचारधारा, विश्व–भ्रातृभाव एवं मानव कल्याण हेतु किये जाने वाले कार्यों के लिए न केवल भारतवर्ष में बल्कि सम्पूर्ण विश्व में आपको सम्मानित किया गया। जहाँ यूरोपियन पार्लियामेंट द्वारा आपको आमंत्रित कर सम्मानित किया वहीं गाँधी ग्लोबल फैमिली द्वारा आपको 'महात्मा गाँधी सेवा मेडल' से सुशोभित किया गया।

मिशन की शिक्षाओं को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित–प्रसारित करने के उद्देश्य से आपने वर्ष 2012 में बर्मिंघम (इंग्लैण्ड) में अन्तर्राष्ट्रीय निरंकारी समागम का आयोजन करवाया। इसी लड़ी को आगे बढ़ाने के लिए गतवर्ष आपने टोरांटो (कनाडा) में दूसरा निरंकारी अन्तर्राष्ट्रीय समागम वर्ष 2016 में आयोजित करने की घोषणा की। इसी समागम की तैयारियों को देखने के लिए 13 मई, 2016 को जब आप अमेरिका के न्यूयॉर्क से कनाडा के मांट्रियल जा रहे थे तब एक सड़क दुर्घटना में आपने भारतीय समयानुसार प्रातः 5 बजे अपना नश्वर शरीर त्याग दिया और निरंकार में विलीन हो गये। इसी दुर्घटना में आपके समर्पित भक्त व दामाद श्री अवनीत जी भी ब्रह्मलीन हो गए।

वर्ष 1980 से 2016 तक 36 वर्षों तक सद्गुरु रूप में सन्त निरंकारी मिशन एवं विश्व को आपने दिव्य मार्गदर्शन प्रदान किया। आपकी अगुवाई में मिशन न केवल आध्यात्मिकता के प्रचार–प्रसार के शिखर पर पहुँचा बल्कि समाज–सेवा के क्षेत्र में भी अग्रणी होने का गौरव हासिल किया। आपने मानव जीवन के हर पहलू विशेषतः पारिवारिक स्नेह व समन्वय, शैक्षिक स्तर में उन्नति, समाज में मानवीय मूल्यों की स्थापना एवं विश्व–बन्धुत्व की भावना को साकार करने हेतु सभी प्रकार के भेदभावों को समाप्त करने का सफल प्रयास किया और 'दीवार रहित संसार' बनाने की दिशा में अग्रसर रहे। यद्यपि बाबा हरदेव सिंह जी महाराज साकार रूप में आज हमारे बीच नहीं हैं लेकिन आपकी शिक्षाएं रहती दुनिया तक मानव–मात्र का मार्गदर्शन करती रहेंगी।

मानवता के मसीहा, शान्ति एवं सद्भाव को विश्व भर में प्रसारित करके 'शान्तिपूर्ण विश्व' की परिकल्पना को साकार करने वाले सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने मानव–मात्र को जीवनपर्यन्त प्रेम और शान्ति का पाठ पढ़ाया और धरती पर बसने वाले प्रत्येक मानव को जागरूकता प्रदान की कि प्रभु की अनुभूति करके ही विश्व में आदर्श समाज की स्थापना की जा सकती है। आप अपने जीवन की अन्तिम श्वांसों तक इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रयासरत रहे।

–सम्पादकीय प्रभाग द्वारा

माता सविन्दर जी
सन्त निरंकारी मिशन की
सद्गुरु

दिल्ली, 17 मई। अनन्त परमात्मा में विलीन हो चुके सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज की धर्मपत्नी पूज्य माता सविन्दर जी अब सन्त निरंकारी मिशन की अगुवाई करेंगी। मिशन के इतिहास में यह पहला अवसर है जबकि मातृशक्ति सद्गुरु के रूप में प्रकट हुई। सन्त निरंकारी मण्डल, यू.के. के महासचिव श्री एच.एस. 'उपाशक' जी ने निरंकारी चौक के समीप ग्राउंड नं. 8 में साध संगत के समक्ष सद्गुरु के प्रकट होने की घोषणा की।

सन्त निरंकारी मण्डल के प्रधान श्री जे. आर. डी. 'सत्यार्थी' जी ने जैसे ही पूज्य माता जी को दुपट्टा पहनाया और पूज्य बहन निरंजन जी ने पुष्प माला पहनाई तो उपस्थित संगतों ने जयघोष कर सद्गुरु के इस नव स्वरूप को हृदय से स्वीकार किया।

जो चेहरे तीन–चार दिन से मुरझाये हुए थे उन पर सन्तोष की झलक देखने को मिली, क्योंकि भक्तों को अपना सद्गुरु पूज्य माता जी के स्वरूप में प्राप्त हो गया। सद्गुरु रूप में अवतरित पूज्य माता सविन्दर जी ने अपने पहले सम्बोधन में कहा ''कुछ भी हो, सिर्फ प्यार ही प्यार हो। हम सब बाबा जी को इसीलिए बहुत प्यार करते हैं, पर बाबा जी यह भी चाहते थे कि हमारा आपसी प्यार बहुत ज्यादा हो। आज हम सब मिल कर यह कसम खायें कि जैसे बाबा जी चाहते थे हम मिल–जुलकर सबके साथ प्यार से आगे बढ़ें और मिशन को आगे से आगे बढ़ायें।''

संग्रहकर्ता : हरजीत निषाद, जगतार 'चमन'

बाबा हरदेव सिंह जी के

अनमोल वचन

- भक्त सेवा, सुमिरण, सत्संग करते हुए इस जीवन की यात्रा को तय करता है। अपना उद्धार करता है और औरों का कल्याण भी।
- जब मन निर्मल हो गया तो जीवन भी निर्मल हो जायेगा।
- जो हरि के रंग में रंगे हुए हैं उनमें ही पवित्रता है पावनता है।
- हमेशा विनम्रता, प्यार, करुणा और दया के भाव से युक्त रहना चाहिए।
- मन में यही शुकराने का भाव हमेशा बना रहे कि मालिक तेरी कृपा है जो तूने सब कुछ दिया है न दिया होता तो मैं आगे देने वाला कौन हूँ?
- अच्छे गुण सदैव मनुष्य को महानता की ओर अग्रसर करते हैं।
- ज्ञान और जवाहरात को छिपाकर रखने से उनकी कीमत और आभा नष्ट हो जाती है।
- घृणा को घृणा से नहीं, केवल प्रेम से ही मिटाया जा सकता है।
- एक–एक पल को संवारने का मतलब जीवन को संवारने से है। समय को, घड़ियों को हम क्या संवारेंगे, क्या बिगाड़ेंगे। समय तो अपनी रफ्तार से चल ही रहा है।
- लाखों मीलों की दूरी तय कर डाली परन्तु दिलों की दूरी इन्सान तय न कर सका।
- विश्व के हर मुल्क में मानव रहते हैं। अगर मानव एकता हो जाती है तो विश्व एकता हो जाती है।
- भक्ति भागने का नहीं, जागने का नाम है।
- प्रेम और अहिंसा की राह अपनायें।
- ज्ञान का उजाला होने से मिटता है मन का अंधकार।
- सभी से प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।
- परमात्मा अगर प्रेम का स्वरूप है तो उसकी अंश आत्मा क्यों न प्रेम की स्वरूप बने।
- धर्म का आधार दया है। यदि दया ही नहीं तो कौन सा धर्म?
- प्रभु के साथ नाता जोड़ना और जोड़े रखना जीवन के पेचीदे मसलों को हल करने का सहज नुक्ता है।
- जूते में पड़ा हुआ कंकर एक–एक कदम रखने पर बेचैन किये रखता है। मन में अभिमान रूपी कंकर आ गया तो उसे बाहर निकालकर ही चैन मिल सकता है।
- भिन्नताएं तो अनेकों हैं लेकिन जरूरत है बीच में धागे की, जो भिन्न–भिन्न फूलों को पिरो डाले।
- सद्भावों को धारण करके जीवन को सजायें और संवारे।
- एक प्रभु के बोध से समाप्त होंगे भेदभाव।
- एकत्व भाव की प्रधानता ही एकता का मूल है।
- शान्ति के लिए एकता और मानवता का होना जरूरी।

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

जनसंख्या विस्फोट

बच्चों जनसंख्या क्या होती?
आज तुम्हें समझाते।
बच्चे, बूढ़े, युवा आदि जन,
सब इसमें आते।।

धरती के सारे देशों में,
सभी जगह जन रहते।
कहीं गाँव वाले कहलाते,
कहीं नगर का कहलाते।।

प्रेमभाव से मिलकर रहते,
काम सभी के आते।
सीमित जनसंख्या के कारण,
जीवन के सुख पाते।।

भोजन पानी, शुद्ध हवा तक,
गाँवों में मिल जाती।
और परेशानी बिजली की,
कभी नहीं हो पाती।।

जन का सहयोगी बनकर जन,
मानव धर्म निभाता।
जन का जन से इस धरती पर,
ये ही सच्चा नाता।।

जनसंख्या सीमित रहती तो,
सारे जन सुख पाते।
हो विस्फोट अगर इसमें तो,
जन भूखों मर जाते।।

देश जहाँ जनसंख्या सीमित,
जीवन स्तर ऊँचा।
और अधिक जनसंख्या हो तो,
सड़कें बनतीं कूँचा।।

सात अरब को आज छू रही,
है जग की आबादी।
इसको बढ़ने से अब रोको,
वरना है बरबादी।।

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

पर, क्या दादा जी?
एक बार की बात है, दो मित्र थे बहुत पक्के।
एक दिन वे दोनों एक साथ घूम रहे थे।
तभी उन्हें सड़क के किनारे पर गिरा हुआ एक बादाम दिखा।

दोनों उस बादाम को लेने के लिए दौड़ पड़े। बादाम उनमें से एक मित्र के हाथ लगा।
दोनों मित्र झगड़ने लगे।
पहले इस बादाम को मैंने देखा था। इसलिए इसे मैं ही खाऊँगा।
नहीं, इसे मैं खाऊँगा।
उनका झगड़ा सुनकर एक आदमी वहाँ आया और झगड़े का कारण पूछने लगा। दोनों मित्रों ने बादाम दिखाकर पूरी बात बता दी।

उस आदमी ने उनसे बादाम ले लिया।
बस इतनी सी बात! लो, मैं अभी इसका हल निकाल देता हूँ।
उस आदमी ने बादाम को तोड़ा और छिलके का एक-एक हिस्सा दोनों मित्रों को दे दिया।
बादाम की गिरि वह आदमी अपने मुँह मे डालकर खा गया और बोला– ये हिस्सा मेरा, क्योंकि झगड़ा, निपटाने में तो तुम्हारी मदद मैंने ही की है ना!
तुम दोनों भी कभी किसी चीज के लिए मत झगड़ना, नहीं तो मैं फायदा उठा जाऊँगा। हा! हा!
कहानी सुनकर बच्चे समझ गये कि हमें कभी झगड़ना नहीं चाहिए। दो के झगड़े में हमेशा तीसरे का फायदा होता है।

कविता : श्यामसुन्दर श्रीवास्तव

मेघ निराले

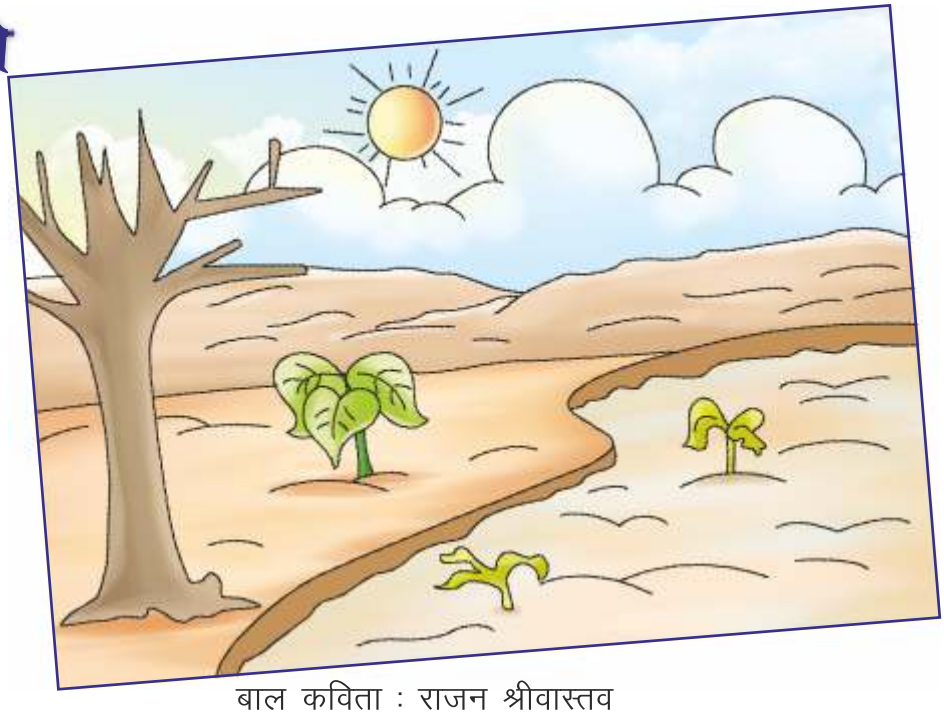

गड्ढे खाली,
नाले खाली,
सूखे ताल–
तलैया खाली।

तपती धरती,
बंजर धरती,
तन मन सबका,
व्याकुल करती।

जल बरसा दो,
धूम मचा दो,
विनती भगवन,
पूरी कर दो।

जमकर बरसो,
जमकर गरजो,
सुखमय सबका,
जीवन करदो।

ओ मतवाले।
मेघ निराले।।

बाल कविता : राजन श्रीवास्तव

काले बादल आये

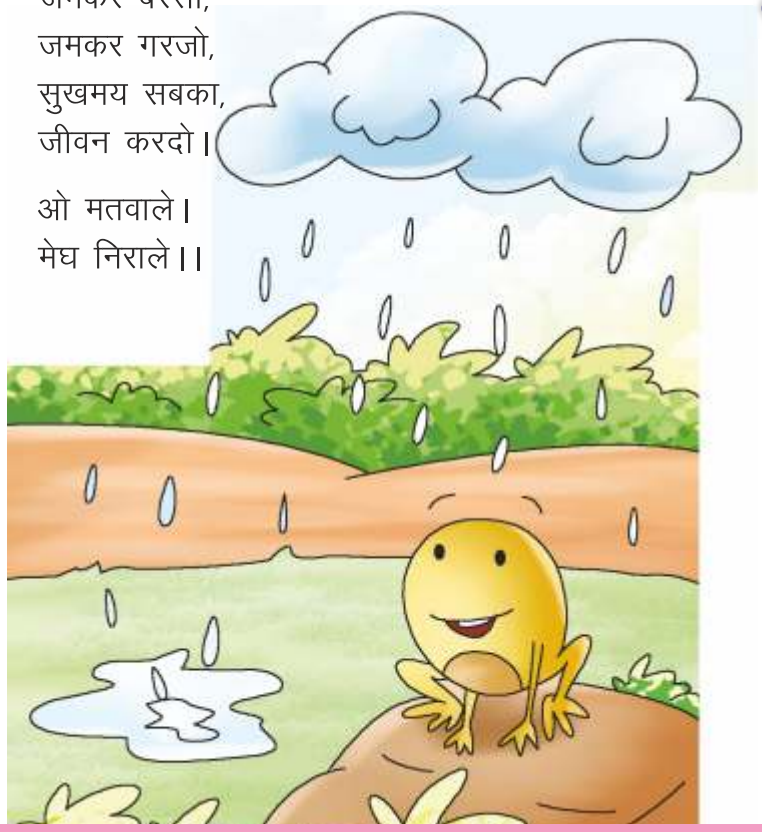

काले बादल नभ में छाये।
गर्जन करते नभ में आये।

झर–झर, झर–झर पानी बरसा,
वन में मोर नृत्य दिखलाये।

टर्र–टर्र, करते हैं मेंढ़क,
झींगुर भी झंकार सुनायें।

हरियाली छाये चहुं ओर,
सूरज आ ज्योति बिखराये।

चीं–चीं, चीं–चीं करते पक्षी,
नभ में उड़ते पंख फैलाये।

चले किसान खेत की ओर,
बच्चे विद्यालय को धाये।

प्रेरक–प्रसंग : राधेलाल 'नवचक्र'

अद्भुत धैर्य, अपार सहनशक्ति

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक थॉमस अल्वा एडीसन के जीवन की एक अविस्मरणीय घटना है। घटना सन् 1914 की है।

अचानक एडीसन की प्रयोगशाला और कारखाना आग की लपेट–चपेट में आ गये और धू....धू कर सब जल उठे। लपटें इतनी ऊँची उठीं, मानो आकाश को छूने की होड़ कर रही हों।

एडीसन इस भयावह दृश्य को अपलक देखता रहा, निर्विकार भाव से। उसकी सारी आशाएं उस आग की लपेट–चपेट में जलकर राख हो रही थीं और वह मूकदर्शक बना निहार रहा था। बचाव का कोई उपाय नहीं था। अतएव कोशिश भी नहीं हो रही थी। सबकुछ स्वाहा होने की स्थिति में था।

पास ही एडीसन का युवा पुत्र भी खड़ा था। वह भी स्तब्ध निगाह से इस अग्निकाण्ड को देख रहा था। एडीसन ने पुत्र से कहा, ''जाओ, अपनी माँ को भी बुला लाओ। यह हमारे जीवन का अद्भुत क्षण अविस्मरणीय वेला है। इस दृश्य को वह भी अपनी आँखों से देख ले। फिर कभी ऐसा देखने को नहीं मिलेगा। जाओ, देर न करो।''

अगले ही क्षण पुत्र माँ को लेकर घटनास्थल पर आ पहुँचा। सारा दृश्य देखकर एडीसन की पत्नी भी किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गयी। बस देखती रही, चुपचाप।

थोड़ी देर बाद वह पति से बोली, "करीब बीस लाख डॉलर के कीमती यंत्र इस आग की भेंट चढ़ चुके हैं। यही नहीं, आपने अपने

जीवनकाल में जो भी आविष्कार किए, उनसे सम्बन्धित सारे महत्वपूर्ण कागजात भी तो इसी प्रयोगशाला में थे, वे भी अग्निदेव को समर्पित हो गए! अब क्या होगा।"

"जो होना था, सो हुआ, कुछ बुरा नहीं हुआ।" एडीसन धैर्यपूर्वक बोला।

"वह कैसे?" पत्नी यों ही पूछ बैठी।

"इस आग की लपेट में हमारी भूलें भी जलकर राख हो गयीं। हमारी गलतियां भी नष्ट हो गयीं। इसके लिए भगवान को धन्यवाद दो।" एडीसन ने आगे कहा, "जानती हो, प्रत्येक नुकसान के पीछे कुछ फायदा भी छिपा रहता है; भगवान की अद्‌भुत व्यवस्था है।"

"क्या फायदा छिपा है?" पति के धैर्य और सहनशक्ति की मन ही मन सराहना करती हुई, एडीसन की पत्नी बोली।

"अब हम बिलकुल नये ढंग से अपना कार्य शुरू करेंगे, नयी उपलब्धि पाएंगे – यही फायदा है।" एडीसन ने कहा।

और फिर एडीसन परिवार उस अग्निलीला को इस तरह देखते रहे, मानो उससे उसका कभी कोई संबंध ही नहीं रहा हो।

सचमुच अद्‌भुत धैर्य था एडीसन में, अपार सहनशक्ति थी उसमें। जीवन के प्रतिकूल स्थिति में यह सोच–मानसिकता ही हमें उदास नहीं होने देती, दुःख से उबारती है।

याद रखने योग्य तीन बातें

– संग्रहकर्ता :
भारत भूषण शुक्ल (खलीलाबाद)

★ तीन चीजें जीवन में एक बार मिलती हैं – माता, पिता और जवानी।

★ तीन चीजें निकलने पर वापस नहीं आती हैं – तीर कमान से बात जुबान से और प्राण शरीर से।

★ तीन चीजों से बचना चाहिए – बुरी संगत, स्वार्थ और निंदा।

★ तीन चीजों में मन लगाना चाहिए – ईश्वर, परिश्रम और अध्ययन।

★ तीन बातें नहीं भूलनी चाहिए – कर्ज, गर्ज और मर्ज।

★ तीन लोगों का आदर करना चाहिए – माता–पिता और गुरु।

★ तीन को हमेशा अपने नियंत्रण में रखना चाहिए – मन, क्रोध और लोभ।

★ तीन पर दया करनी चाहिए – बालक, भूखा और पागल।

विशेष आलेख : श्यामसुन्दर गर्ग

शान्ति निकेतन का वृक्षारोपण पर्व

रवीन्द्रनाथ टैगोर एक महान कवि, कलाकार, शिक्षाविद् एवं मानवता के पुजारी थे। उन्होंने शान्ति निकेतन को एक ऐसा स्थान बनाया, जहाँ पहुँचकर मनुष्य अपने को सामाजिक कमजोरियों से कुछ ऊपर महसूस करने लगता है।

जीवन के कुछ कार्य ऐसे होते हैं यदि उनको कवि अथवा कलाकार के अनुरूप बनाया जाए तो वे उल्लास व उमंग में परिवर्तित हो जाते हैं। शान्ति निकेतन में ऐसे अनेक उत्सव व पर्व मनाये जाते हैं, जो ऋतुओं व मौसम पर आधारित होते हैं। जैसे वर्षा ऋतु में वृक्षारोपण पर्व, पौष मेला, माघ मेला, वैशाख मेला, बच्चों को अपनी कृतियों को बेचने के लिये 'आनन्द मेला' आदि पर्व समय–समय पर आयोजित होते हैं।

वृक्षारोपण पर्व प्रथम सत्र का प्रथम पर्व होता है। इसके लिए किसी उपर्युक्त स्थान पर किसी उपयुक्त अतिथि को निमंत्रित किया जाता है। जिस स्थान पर वृक्ष लगाने का आयोजन होता है, वहाँ एक गड्ढ़ा खोदकर उसके चारों तरफ अल्पना बना दी जाती है। जिस वृक्ष के पौधे का रोपण होना होता है, उस पौधे को वहाँ ले जाने के लिए छात्र–छात्राएं मिलकर एक डोली बनाते हैं, उसे पुष्प व फलों से सजाते हैं और फिर उसमें पौधे को रखा जाता है।

कुछ छात्र जो इस डोली को उठाकर ले जाते हैं, वे श्वेत वस्त्रों में सुसज्जित होते हैं। कुछ छात्राएं जो सफेद साड़ी व पीली चादर में सजी–संवरी होती हैं, वे डोली के पीछे चलती हैं। उनमें किसी के हाथ में शंख, तो किसी के हाथ में फूलमालाएं, अगरबत्ती, चंदन आदि होते हैं।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के वर्षाऋतु के गीतों की झंकार के साथ–साथ जुलूस धीरे–धीरे आगे बढ़ता है। अपने स्थान पर पहुँचकर सब लोग अपना–अपना स्थान ले लेते हैं। कुछ मंत्र–पाठ, धूप–दीप आदि के उपरांत शंखनाद के साथ–साथ मुख्य अतिथि को माला पहनाकर उनसे वृक्षारोपण का आग्रह किया जाता है। वर्षा ऋतु के कुछ गीतों के बाद उत्सव समाप्त हो जाता है।

पेड़ लगाना एक महान कार्य है, जिसे कवि की कल्पना ने नया रूप दे दिया। कवि के साथ–साथ उन लोगों का भी उतना ही महत्व है, जिन्होंने कवि की कल्पना को साकार रूप देने में सहयोग प्रदान किया। इस प्रकार से छोटे–छोटे कार्यों को उत्सव का रूप देने से सृजनात्मक व आनन्दमयी वातावरण बनाया जा सकता है।

वर्ग पहेली

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा

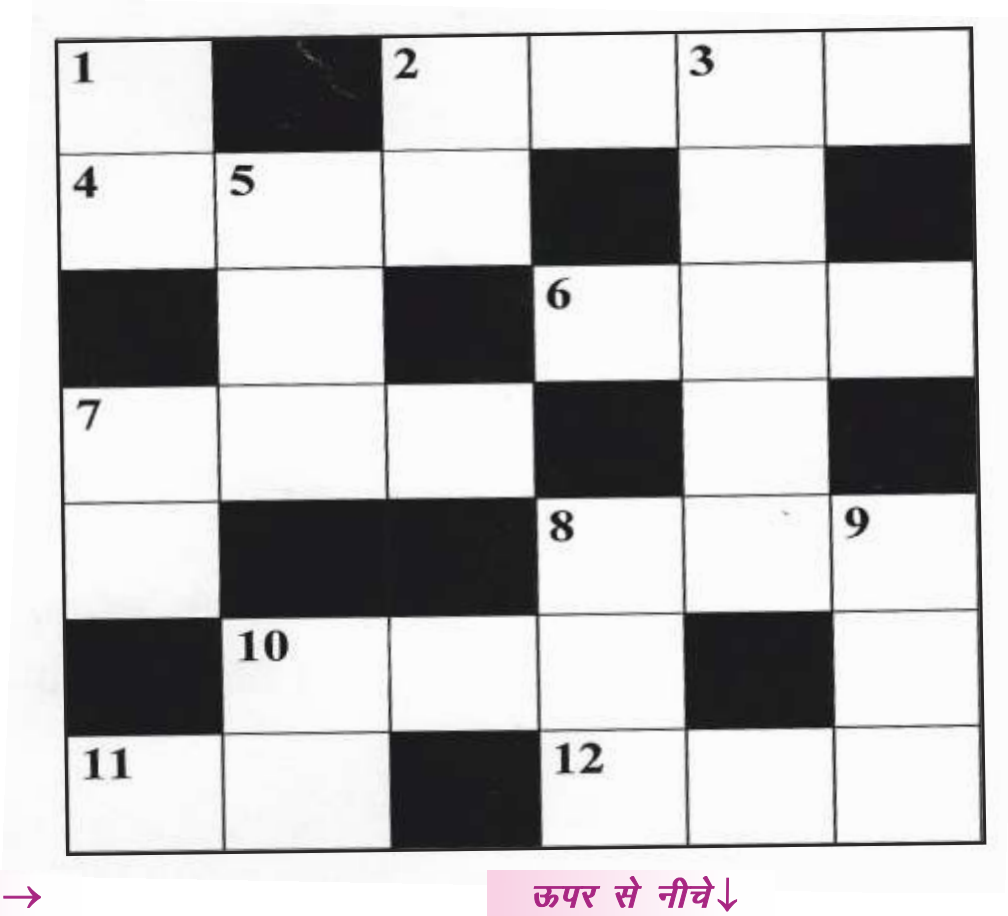

बाएं से दाएं →

2. भारत के उपराष्ट्रपति के चुनाव में ..... और राज्य सभा के सदस्य मतदान करते हैं।
4. सुभाष चन्द्र बोस ने कहा था– 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें ..... दूंगा।
6. सवा दर्जन केले यानि ..... केले।
7. एक घण्टे में साठ ..... होते हैं।
8. दासी जिसने कैकेयी को राजा दशरथ से वरदान मांगने के लिए उकसाया था।
10. मेघालय राज्य की राजधानी।
11. दीवार का निचला हिस्सा जो जमीन के अंदर होता है।
12. सीता की देवरानी उर्मिला के पति का नाम।

ऊपर से नीचे↓

1. चाचा की बहन।
2. लोदी वंश का अंतिम शासक इब्राहिम ..... था।
3. भारतीय सिविल सर्विस में शामिल होने वाले पहले भारतीय ..... टैगोर थे।
5. एशियाई देश जिसे 'उगते सूरज का देश' कहा जाता है।
7. .... देश को 'नील नदी का उपहार' कहा जाता है।
8. ..... ग्रह को 'लाल ग्रह' के नाम से जाना जाता है।
9. वनवास के दौरान सीता का अपहरण करने वाला?
10. भगवान ..... जी की पत्नी का नाम पार्वती है।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में है)

कहानी : डॉ. राजीव गुप्ता

जम कर खेलो

नंदनवन में राष्ट्रीय स्तर के खेल शुरू होने वाले थे। इधर चंपकवन के जानवर भी पूरे उत्साह में थे। उन्हें जब भी अपने कामकाज से समय मिलता बस खेलों की ही बातें किया करते थे। इस बार चंपकवन के कुछ खिलाड़ी भी इन खेलों में हिस्सा ले रहे थे।

मोंटी बंदर को तो विश्वास भी था कि चंपकवन के खिलाड़ी जरूर गोल्ड मैडल जीतकर लाएंगे। इसी बात को लेकर उसकी अपने दोस्तों से शर्त भी लग गई थी।

मोती कुत्ते ने कहा– 'हाँ, तुम ठीक कहते हो मोंटी अपने गंजू हाथी को बॉक्सिंग में कोई नहीं हरा सकता। वह जिसके भी एक मुक्का मार देगा, वह धूल चाटता नजर आएगा। उसे जरूर गोल्ड मैडल मिलेगा।'

इस पर फौक्सी लोमड़ी बोली– 'अपनी हिरणा हिरणी क्या किसी से कम हैं। बैडमिंटन कोर्ट पर फिरकी–सी नाचती है। लोग ठीक ही उन्हें बैडमिंटन क्वीन कहते हैं। उनके सामने किसी की क्या मजाल कि कोई गोल्ड मैडल जीत ले जाएं।'

सोनू गधा बहुत देर से खड़ा–खड़ा सबकी बातें सुन रहा था, अचानक बोल पड़ा, 'काश! मुझे भी खेलों में भाग लेने का मौका मिल पाता तो एक–आध गोल्ड मैडल तो मैं भी जीत लाता।'

'लेकिन सोनू, तुम भला किस खेल में भाग लेते?' आम के पेड़ की डाल पर झूलते हुए लालू लंगूर ने पूछा।

'मैं दुलत्ती मार–मारकर सबके होश उड़ा सकता हूँ। इस खेल में कोई मुझसे नहीं जीत सकता है,' सोनू ने कुछ शान से कहा।

उसकी बात सुनकर सब लोग हँसने लगे।

'क्यों, तुम सब लोग हँस क्यों रहे हो? क्या चंपकवन में मुझसे भी अच्छी दुलत्तियां कोई मार सकता है?' सोनू सबको हँसता देखकर कुछ चिढ़ गया।

'नहीं...नहीं ऐसी बात नहीं, दुलत्तियों के तो खैर तुम उस्ताद हो। भला इसमें तुम्हारी बराबरी कौन कर पाएगा,' अपनी हँसी रोकते हुए फौक्सी बोली।

'तो फिर?' सोनू की हैरानी और बढ़ गई थी।

'दरअसल सोनू भाई, वहाँ इस तरह का कोई खेल शामिल नहीं है, जिसमें दुलत्तियां मारने की जरूरत पड़े।'

यह सुनकर सोनू निराश हो गया।

'तुम निराश मत हो सोनू, अगर तुम खेलों में भाग लेना ही चाहते हो तो अगली बार दौड़ में भाग लेना। पर इसके लिए तुम्हें बहुत मेहनत करनी पड़ेगी', मोंटी ने उसे सुझाव दिया।

'हाँ...हाँ क्यों नहीं, मैं आज से ही अगले साल की तैयारी में जुट जाऊँगा,' सोनू ने कुछ उत्साह से कहा।

'वाह! यह हुई न खिलाड़ियों वाली बात,' सभी जानवरों ने उसका उत्साह बढ़ाया।

'इस बार दौड़ में चंपकवन से कौन भाग लेने जा रहा है?' सोनू ने जानना चाहा।

'हनी घोड़ा,' फौक्सी ने उसे बताया।

'वाह, तब तो वह जरूर जीतकर आएगा। वह दौड़ता भी तो सरपट है,' सोनू ने हनी की प्रशंसा करते हुए कहा।

'हाँ....हाँ...क्यों नहीं, वह तो रेस का चैम्पियन है, पर मेरे दिमाग में एक बात और है,' मोंटी ने कुछ सोचते हुए कहा।

'वह क्या?' सबने जानना चाहा।

'अगर हम सब लोग भी नंदनवन चलकर अपने खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाएं तो वे लोग और भी अच्छा खेलेंगे,' मोंटी ने सलाह दी।

'हाँ, कहते तो तुम ठीक हो, पर नंदनवन जाने के लिए और वहाँ रहने–खाने के लिए तो बहुत सारे रुपयों की जरूरत होगी,' फौक्सी बोली।

'हाँ, यह तो है। पर इसके लिए हम लोग कुछ काम करके रुपए इकट्ठे कर सकते हैं। वैसे भी आजकल हम लोगों के स्कूल की छुट्टियां चल रही हैं,' सोनू ने सलाह दी।

'वाह, सोनू आज तूने वाकई बड़ी अक्ल की बात की है। हम सब आज से ही किसी न किसी काम में लग जाते हैं। वैसे भी खेल शुरू होने में अभी कई दिन बाकी है। इतने दिनों में हम सब लोग खूब रुपए इकट्ठे कर लेंगे,' सभी दोस्तों ने खुश होकर तालियां बजाईं।

फिर सब लोग उसी पल काम की तलाश में निकल पड़े।

कुछ ही दिनों में उन सबने रात–दिन एक करके इतना रुपया जमा कर लिया था कि वे ठाठ से नंदनवन के स्टेडियम में बैठे अपने चंपकवन के खिलाड़ियों का बड़े जोर–शोर से उत्साह बढ़ा रहे थे।

इसका परिणाम भी अच्छा निकला। चंपकवन के खिलाड़ियों ने सबसे अधिक मैडल जीते। वाकई में अपनों का प्यार, सम्मान व प्रोत्साहन पाकर खिलाड़ी उत्साह से भर उठते हैं। ■

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 134

थां थां होका देंदा फिरदा रब दी किवें पहचान करां।
जेकर रब मिला दए कोई जिंद जान कुरबान करां।
उस दे दर दा कूकर बण जां पाणी उस दा भरदा रहां।
तन मन धन दी भेंट चढ़ा के बणया उस दा बरदा रहां।
मन दी सारी शेख़ी छड के जपदा रहां जो देवे नाम।
लूं लूं मेरा करदा रहसी हर वेले उस नूं परनाम।
उसदे चरनां दी धूड़ी विच करदा रहसां मैं इश्नान।
जेहड़ा एह निरंकार मिलाए भुल्लां न उसदा एहसान।
पूरे गुर दी शरनीं जा के बन्दे अपणा आप मिटा।
कहे अवतार करो फिर बिनती दाता दाते नाल मिला।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि परमात्मा की प्राप्ति की इच्छा रखने वाला मानव जगह–जगह आवाज देता है, ढिंढोरा पीटता है कि परमात्मा की पहचान कैसे हो सकती है? कहता है कि यदि कोई मुझे परमात्मा से मिला दे तो मैं अपना जीवन–प्राण उसके ऊपर कुरबान कर दूं। उसके घर का कुत्ता बनकर अपनी वफादारी निभाऊँ, उसका पानी भरता रहूँ। तन, मन, धन की भेंट चढ़ाकर, उसका गुलाम बनकर अपना पूरा जीवन उसके चरणों में ही गुजार दूँ।

प्रभु प्राप्ति की तीव्र इच्छा रखने वाला इन्सान कहता है कि अपनी सारी शेखी (अभिमान) छोड़कर जो भी नाम जपने के लिए मुझे कहे, मैं उसी को जपता रहूँ। मेरा रोम–रोम हर समय उसको प्रणाम करता रहे और उसके चरणों की धूल में मैं हमेशा स्नान करता रहूँ अर्थात् उसकी सेवा–चाकरी करने, उसके वचन मानने को ही मैं अपना सर्वोत्तम काम समझूं। जिसने मुझे इस निरंकार–प्रभु से मिलाया, उसका एहसान मैं कभी भी न भुलाऊँ।

परमात्मा की प्राप्ति के ऐसे चाहवान को बाबा अवतार सिंह जी समझा रहे हैं कि ऐसी इच्छा रखने वाले इन्सान! तू पूर्ण सद्गुरु की शरण में जाकर अपना आप मिटा दे अर्थात् सारा अभिमान त्याग दे और फिर यह प्रार्थना कर कि मुझे निरंकार–परमात्मा से मिला दो।

प्रस्तुति : विद्या प्रकाश

भाँति भाँति के मेंढक

वर्षाकाल में घर के लॉन, खेत खलिहान तथा मैदान में टर्र–टर्र की आवाज करते तथा उछलते–कूदते मेंढक आसानी से दिखलायी पड़ते हैं। संसार में इन मेंढकों की लगभग 150 प्रजातियां पायी जाती हैं। इनमें से कुछ मेंढकों के शरीर की बनावट ऐसी होती है कि उनके बारे में जानकर लोगों को हैरत हुए बगैर नहीं रहती।

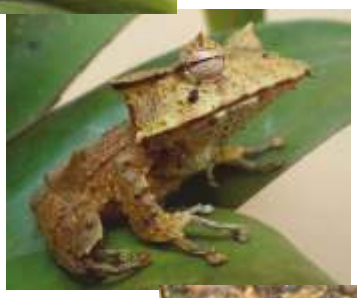

विश्व का सबसे बड़ा और भारी भरकम मेंढक पश्चिमी अफ्रीका में पाया जाता है, जिसका नाम गोलियथ है। इसकी लम्बाई 30 सेंटीमीटर तथा वजन लगभग साढ़े तीन किलोग्राम होता है। आकार में सबसे छोटा मेंढक क्यूबा में पाया जाने वाला क्यूबन ड्वार्क है।

साइबेरिया के सघन वन में गुलाबी और नीले रंग के मेंढक पाये जाते हैं। यहाँ एक ऐसी नस्ल का भी मेंढक पाया जाता है, जो गिरगिट की भांति आवश्यकता तथा परिस्थिति के अनुसार रंग परिवर्तन में माहिर है। दक्षिण अमेरिका में अमेजन नदी के निकट चिड़िया की आकृति के हरे रंग के मेंढक पाये जाते हैं। जब इनका रंग बदलकर हरे से लाल हो जाता है तो इसे बारिश आने का संकेत माना जाता है।

ब्राजील, अर्जेंटीना तथा एशिया के अनेक देशों में सींग वाले मेंढक भी पाये जाते हैं। इनकी खाल खुरदरी होती है तथा इनकी आँखों पर दो सींग होते हैं। दक्षिण अफ्रीका के जंगलों में जहरीली त्वचा वाले मेंढक पाये जाते हैं। आदिवासी इनके जहर को अपने बाणों में लगाकर शिकार करते हैं। इसलिए इन्हें 'एरो मेंढक' भी कहा जाता है। इसी इलाके में ब्राई नस्ल का ऐसा मेंढक पाया जाता है जो सात फीट लम्बे सांप को भी निगल जाता है। दक्षिण अफ्रीका के अंधेरे जंगल में लाल रंग के मेंढक पाये जाते हैं जिनकी आवाज घोड़े की हिनहिनाहट से मिलती जुलती है।

थाईलैंड के मेंढक संगीत प्रेमी होते हैं। वे ऐसी तान छेड़ते तथा ऐसा स्वरालाप करते हैं जैसे कोई बांसुरीवादन कर रहा है।

कविता : भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'

वर्षा रानी आई है

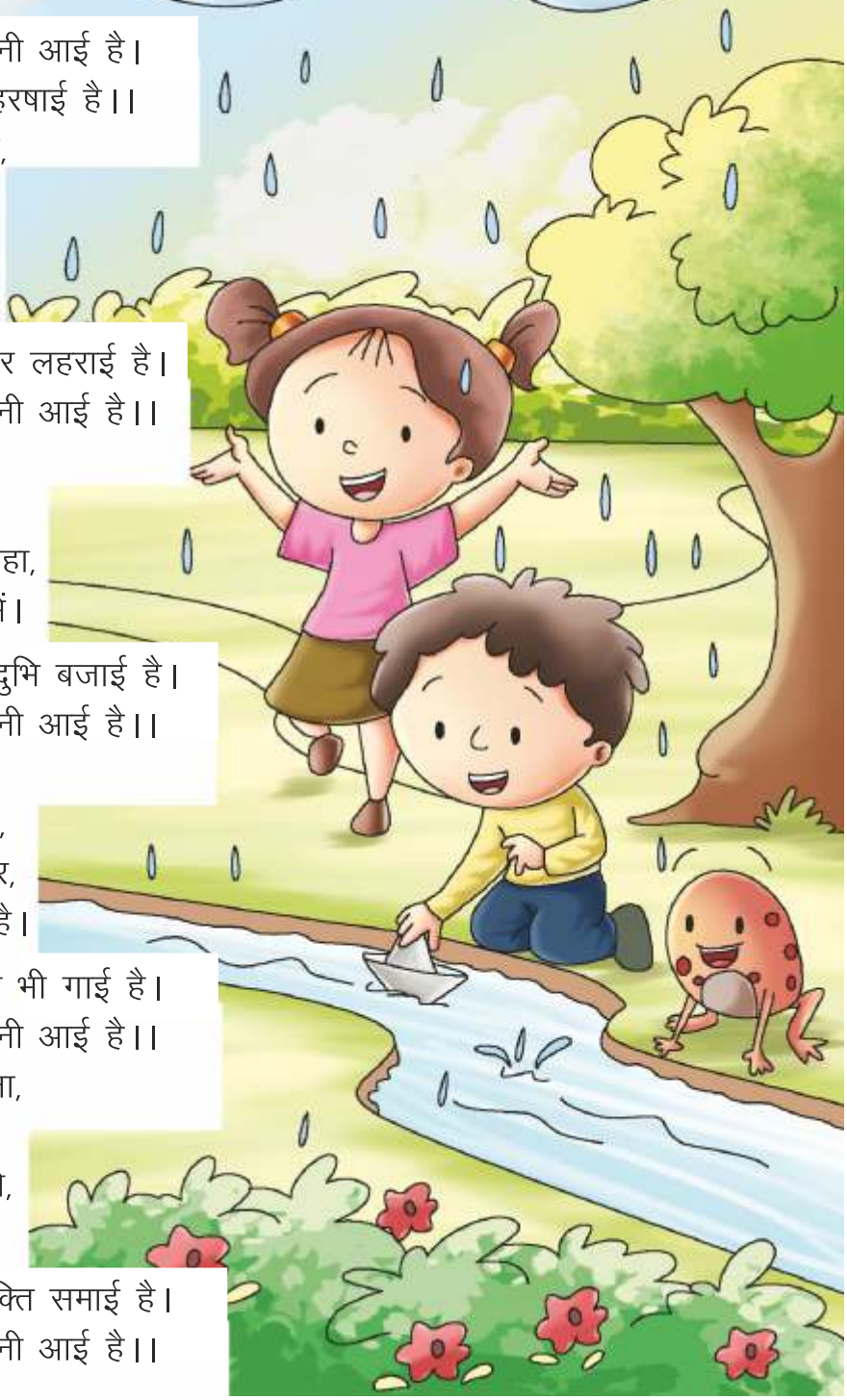

आयी है फिर आयी है, वर्षा रानी आई है।
वर्षा की बौछारों से धरती माँ हरषाई है।।
निकले दादुर स्वागत में,
लगे रात दिन टर्राने,
झींगुर झांझ बजाते हैं,
पक्षी गाते हैं गाने।

धरती ने धानी चुनर लहर–लहर लहराई है।
आयी है फिर आयी है, वर्षा रानी आई है।।
चढ़ी जवानी फिर देखो,
नदियों की जलधारा में,
व्यथित पपीहा विलख रहा,
प्रिया–विरह की कारा में।

घने बादलों ने नभ में फिर दुन्दुभि बजाई है।
आयी है फिर आयी है, वर्षा रानी आई है।।
वर्षा रानी माँ जैसा,
सब पर प्यार लुटाती है,
अपना जीवन जल देकर,
जग की प्यास बुझाती है।

वर्षा की भारी महिमा कवियों ने भी गाई है।
आयी है फिर आयी है, वर्षा रानी आई है।।
बच्चों का तो क्या कहना,
वर्षा में अति सुख पाते,
नाव बनाकर कागज की,
वर्षा–जल में तैराते।

वर्षा में ही जीवन की सारी शक्ति समाई है।
आयी है फिर आयी है, वर्षा रानी आई है।।

जानकारी : विभा वर्मा

(W.H.O.)
'वर्ल्ड हेल्थ आर्गनाईजेशन' यानि विश्व-स्वास्थ्य-संगठन क्या है?

विश्व स्वास्थ्य संगठन संयुक्त राष्ट्र संघ की एक विशेष एजेन्सी है। दुनिया भर की जनता के स्वास्थ्य में सुधार करना ही इस संस्था का अंतिम और एकमात्र मकसद है। यह औपचारिक तौर पर 7 अप्रैल 1948 को यह संगठन वजूद में आया। विश्व स्वास्थ्य संगठन की महासभा की बैठक प्रत्येक वर्ष आमतौर पर मई में संगठन के मुख्यालय जेनेवा में होती है। इस बैठक में संगठन के सभी देशों के प्रतिनिधि शामिल होते हैं। इस प्रकार अपने कार्यों को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए संगठन ने दुनिया भर में 6 क्षेत्रीय कार्यालय खोले हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की विभिन्न कार्य योजनाएं 'विश्व स्वास्थ्य महासभा' 'वर्ल्ड हेल्थ असेम्बली' द्वारा मंजूर की जाती है। इस प्रकार महासभा संगठन का सर्वोच्च नीति नियामक निकाय है। असल में जो देश संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य होते हैं वे स्वतः ही इस संगठन के सदस्य बन जाते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की नीतियों व कार्य योजनाओं को ठीक ढंग से संचालित करने के लिए सचिवालय की स्थापना की गई है और इस सचिवालय का प्रमुख महानिदेशक होता है। और इस महानिदेशक के नाम की सिफारिश सचिवालय की कार्यपालिका परिषद करती है। जो इस कार्यपालिका परिषद के सभी सदस्य चिकित्सा विज्ञान की नामवर हस्तियां होती हैं।

जानकारीपूर्ण लेख : विद्या प्रकाश

बौना सूअर

पूरी दुनिया में सूअर समुदाय का सबसे नन्हा सदस्य है बौना सूअर। कुछ वर्ष पहले तक ये भारत, नेपाल तथा भूटान के तराई क्षेत्र में बहुतायत में पाये जाते थे। अब ये केवल असम में ही दिखाई पड़ते हैं। इनकी संख्या लगभग डेढ़ सौ तक सिमटकर रह गयी है। इण्टरनेशनल यूनियन फॉर कन्जेवशन आफ नेचर (आई.यू.सी.एन.) ने इन्हें विलुप्तप्रायः जीवों की श्रेणी में रखा है।

बौने सूअर लम्बी घास वाले सघन वन में पाये जाते हैं। ये पौधों की जड़ और छोटे–छोटे फल बड़े चाव से खाते हैं। कीड़े–मकोड़े इनका प्रिय भोजन है। इनके शरीर की लम्बाई लगभग 55–70 सेंटीमीटर होती है तथा इनका वजन लगभग 6 से 11 किलोग्राम होता है। इनकी पूंछ लगभग 2.5 सेंटीमीटर लम्बी होती है। इनकी खाल गहरे भूरे रंग की होती है तथा गर्दन के पीछे बालों का गुच्छा होता है। बौना सूअर लगभग 8 साल तक जीता है। जंगल में ये भूमि खोदकर अपने लिए घर बनाते हैं। कुछ वर्ष पूर्व तक ये उत्तर प्रदेश, असम, नेपाल तथा उत्तरी बंगाल की सीमा पर दक्षिणी हिमालय की छोटी–छोटी पहाड़ियों पर पाये जाते थे। इन स्थलों पर मनुष्यों के खेती करने, मकान बना लेने तथा पालतू पशुओं को चराने के चलते न केवल इनके रहने की जगह सिमटती चली गयी, बल्कि इनकी संख्या भी घट गयी।

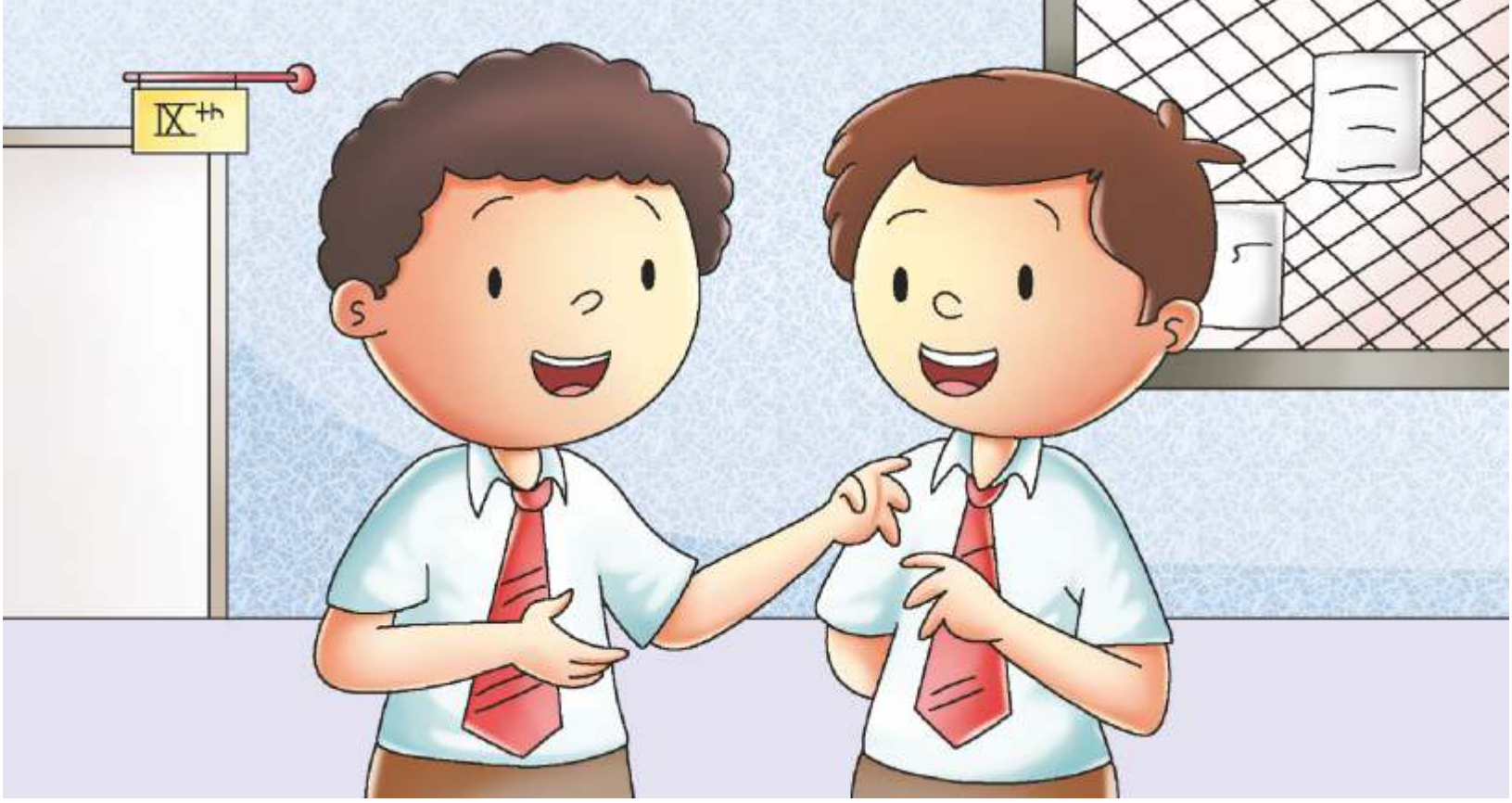

बाल कहानी : रूपनारायण काबरा

मित्र हो तो ऐसा

अनिल कक्षा नौ का विद्यार्थी था। अरूण उसका सहपाठी था। दोनों में गहरी दोस्ती थी पर दोनों में जमीन–आसमान का अन्तर था। अरूण परिश्रमी तथा नियमित अध्ययनशील था। सदैव कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करता था। उसके कार्य एवं व्यवहार से सभी अध्यापक प्रसन्न थे।

अनिल बड़ा लापरवाह था। उसका पढ़ाई की ओर कोई ध्यान नहीं था। न वह पढ़ता था और न नियमित रूप से कक्षा में ही उपस्थित रहता था। आये दिन उसे घर वालों और अध्यापकों की डांट खानी पड़ती थी। वह पढ़ाई में नहीं, नकल में विश्वास करता था। वह स्वयं परिश्रम न करके परीक्षा में मौका देखकर नकल से काम चलाता था। उसका मित्र अरूण उसे समझाता था पर वह उसकी एक नहीं सुनता था।

वार्षिक परीक्षा आ गई। उस दिन अंग्रेजी का पर्चा था। अंग्रेजी उसे बिल्कुल नहीं आती थी। उसने कुंजियों से पन्ने फाड़–फाड़ कर कतरनें तैयार कीं तथा अपने कुछ मित्रों से मिन्नतें की कि वे परीक्षा भवन में उसकी मदद करें।

उस दिन उसके कमरे में ड्यूटी थी सक्सेना साहब की, वे बड़े सख्त स्वभाव के थे। उनको देखते ही अनिल की तो सिट्टी–पिट्टी गुम हो गई और उसकी सब तैयारी धरी रह गई।

इसी प्रकार गणित व सामाजिक–ज्ञान में भी अनिल कुछ भी नकल नहीं कर सका। विज्ञान के दिन तो वह पकड़ा भी गया। उसकी परीक्षा निरस्त कर दी गई। नतीजा यह हुआ कि अनिल फेल हो गया जबकि उसका मित्र अरूण अब दसवीं कक्षा में पहुँच चुका था।

अनिल उदास रहने लगा। अब वह अरूण से भी कतराने लगा था। एक दिन अरूण उसके घर पहुँचा और बोला– अनिल, तुम इतने उदास क्यों रहते हो? नकल के भरोसे बैठे रहने का और परिश्रम नहीं करने का यही तो नतीजा होता है। देखो, मैं तुम्हारा मित्र हूँ। आज तुम्हारा सहपाठी नहीं तो क्या हुआ, मित्र तो हूँ और मित्र ही रहूँगा। देखो, उदासी और निराशा छोडो। निश्चय करो कि परिश्रम करोगे और खूब पढ़ोगे। मैं स्वयं पढ़ाई में तुम्हारी सहायता करूँगा। मुझे विश्वास है कि तुम भी प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होओगे।

अनिल को बात समझ में आ गई, वह ठोकर जो खा चुका था। उसने कहा, ''अरूण, तुम कितने अच्छे हो। तुमने मुझे रोशनी की नई किरण दी है। मैं परिश्रम करूँगा।''

अनिल अपने मित्र अरूण के सहयोग से शीघ्र ही सब कुछ समझने लगा। वह कक्षा में उपस्थित रहने लगा, दिया गया गृहकार्य भी पूरा करता और ध्यान से खूब पढ़ने लगा। वार्षिक परीक्षा में उसकी तैयारी पक्की थी और उसने कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। अरूण को इससे अपार प्रसन्नता हुई। अनिल के माता–पिता और गुरुजन सभी अनिल में आये इस परिवर्तन की प्रशंसा करने लगे।

वार्षिकोत्सव पर पुरस्कार प्राप्त करने पर अनिल ने कहा, '' मेरी इस सफलता का सारा श्रेय मेरे मित्र अरूण को है जिसने मेरे असफल होने पर मेरा मार्गदर्शन कर मुझे हौसला दिया और मुझे परिश्रम करने की ओर प्रेरित किया तथा स्वयं भी पूरा सहयोग दिया। ईश्वर सबको ऐसे मित्र दे।''

जानकारी : विभा वर्मा (वाराणसी)

ग्लूकोज क्या होता है?

ग्लूकोज एक प्रकार की शर्करा है। इसे ही डेक्सट्रोज भी कहा जाता है। यह कार्बन का एक यौगिक है जो हमारे रक्त एवं मूत्र में अलग–अलग मात्रा में पाया जाता है। ग्लूकोज की उत्पत्ति चीनी या स्टार्च से होती है। तनु गंधक के अम्ल द्वारा स्टार्च का जल विश्लेषण (हाइड्रोलिसिस) किया जाता है।

औद्योगिक प्रणाली में भी इसी क्रिया को आधार मानकर ग्लूकोज का उत्पादन किया जाता है। ग्लूकोज का उत्पादन सेलूलोज द्वारा भी किया जाता है। इस प्रकार ग्लूकोज बनाने वाले तत्व चीनी, स्टार्च, सेलूलोज को 'पाली सैकराइड' कहते हैं।

शहद फलों के रस और कुछ वनस्पतियों में यह अधिक मात्रा में पाया जाता है। यही ग्लूकोज हमारे शरीर के यकृत और मांसपेशियों में ग्लाइकोजन के रूप में भी पाया जाता है।

ग्लूकोज भी अन्य शर्कराओं के समान पानी में घुलनशील है, पर यह एल्कोहल अथवा ईथर में नहीं घुल पाता है।

सूखा ग्लूकोज जितना चाहे खा सकते हैं। 5–10 ग्राम से लेकर 100–150 ग्राम तक जबकि इसको चढ़ाने में एक पूरी बोतल से 25 से 50 ग्राम तक ही ग्लूकोज प्राप्त होता है।

वैज्ञानिक जानकारी : डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : ऑक्सीजन को 'अग्नि–वायु' क्यों कहते हैं?

उत्तर : वायु कई गैसों का मिश्रण है। इसमें मुख्यतः नाइट्रोजन और आक्सीजन गैसें हैं। आयतन के अनुसार वायु में लगभग 21%, ऑक्सीजन तथा 78%, नाइट्रोजन गैस होती है। इन गैसों के अलावा वायु में कार्बन डाईऑक्साइड, ओजोन, अमोनिया, नाइट्रोजन के ऑक्साइड, आर्गन, निऑन, हीलियम जैसी कुछ अक्रिय गैसें भी उपस्थित रहती हैं। वस्तुओं के दहन के लिए वायु का जो भाग जिम्मेदार होता है, उसे ऑक्सीजन कहते हैं। दूसरे शब्दों में, वायु का 21% भाग ही दहन क्रिया में भाग लेता है। अतः ऑक्सीजन को 'अग्नि–वायु' भी कहते हैं।

प्रश्न : वैल्डिंग के लिए ऑक्सी–एसीटिलीन ज्वाला का प्रयोग क्यों किया जाता है?

उत्तर : लोहा साधारण ताप पर नहीं पिघलता है। इसके लिए अधिक ताप का होना आवश्यक है। ऑक्सी–एसीटिलीन की ज्वाला का तापमान 3000^{0}C होता है। इस ताप पर लोहे के टुकड़े आदि पिघल जाते हैं जिससे उन्हें वैल्डिंग करने में सुविधा होती है। अतः वैल्डिंग करने के लिए ऑक्सी–एसीटिलीन ज्वाला का प्रयोग किया जाता है।

प्रश्न : शर्बत बनाने के लिए पानी में पहले चीनी डालकर फिर बर्फ क्यों मिलाई जाती है?

उत्तर : शर्बत बनाने के लिए पानी में चीनी और बर्फ मिलाई जाती है। किंतु, पानी में पहले बर्फ न डालकर चीनी ही डाली जाती है। यदि शर्बत बनाने के लिए बर्फ पहले डाल दी जाए तो पानी का तापमान कम हो जाएगा और पानी (विलायक) की घोलने की शक्ति (विलायकता) कम हो जाएगी। अतः चीनी ठीक ढंग से नहीं घुलेगी।

बोधकथा : महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही'

सुन्दरता

अच्छी तरह से स्नान करने के उपरांत वह नये–नये कपड़े पहनकर सीधा दर्पण के सामने जा खड़ा हुआ और मन ही मन कहने लगा– वाह! अब मैं कितना सुन्दर और अच्छा लग रहा हूँ।

तभी अचानक वह सकपका गया।

उसे लगा जैसे दर्पण उसे समझाते हुए कुछ कह रहा है– तुम स्नान करने के उपरांत बहुत अच्छे और सुन्दर तो लग रहे हो किंतु तुमने कभी अपने मन (हृदय) के विषय में भी सोचा है क्या? तुम्हारे कलुषित मन में तो पाप–कपट–छल–धोखा और अहंकार भरा हुआ है इसलिए तन की सुन्दरता से पहले अपने मन की सुन्दरता पर ध्यान दो। अपने शरीर की तरह अपने मन को भी साफ करो।

अब उसका सिर नीचे झुक गया था। अगले ही पल वह दर्पण से दूर जा चुका था।

प्रेरक–प्रसंग : प्रियंका चोटिया 'आंचल'

ज्ञान

यह घटना उस समय की है जब सर विलियम जोन्स कलकत्ता हाई कोर्ट के जज थे। बचपन से ही उन्हें पढ़ाई व नई–नई भाषाएं सीखने का शौक था। भारत आने के बाद उन्हें संस्कृत भाषा ने प्रभावित किया। वह उस भाषा को सीखना चाहते थे। किन्तु कोई भी उन्हें उस समय संस्कृत सिखाने को तैयार न था। आखिर काफी भाग–दौड़ करने के बाद एक आचार्य (संस्कृत भाषा के ज्ञाता एक पंडित जी) उन्हें संस्कृत पढ़ाने के लिए तैयार हुए। लेकिन आचार्य ने संस्कृत पढ़ाने के लिए अत्यंत कठोर शर्तें सर विलियम जोन्स के सामने रखीं। मसलन जिस कक्षा में वो पढ़ायेंगे वहाँ एक मेज दो कुर्सी के अलावा कुछ नहीं रहेगा। प्रतिदिन कक्षा की सफाई अच्छी तरह से होगी। सर विलियम जोन्स को मांस–मदिरा का त्याग करना होगा। आचार्य के आने–जाने के लिए पालकी की व्यवस्था होगी। ऐसी कई शर्तो के साथ सर विलियम जोन्स को संस्कृत सिखाने के लिए वे (आचार्य) तैयार हुए।

पढ़ाई आरंभ हो गई। शुरू में भाषा सीखने में अनेक कठिनाइयां सामने आई। सर विलियम जोन्स टूटी–फूटी हिन्दी जानते थे और आचार्य जी अंग्रेजी का एक अक्षर भी समझ नहीं पाते थे। खैर कुछ दिनों तक दोनों ही लोग बेहद परेशान हुए। किन्तु सर विलियम के मन में संस्कृत सीखने की जबर्दस्त लगन थी। वह संस्कृत सीखने के लिए सभी कठिनाइयों से जूझने के लिए हर क्षण तैयार रहते थे। कुछ ही समय में सर विलियम जोन्स की सेवा, लगन व मेहनत से आचार्य बहुत प्रसन्न हुए उन्होंने उन्हें हृदय से संस्कृत का ज्ञान देना शुरू किया। कुछ वर्ष के कड़े परिश्रम के बाद सर विलियम जोन्स संस्कृत के प्रकांड विद्वान हो गए। उन्होंने संस्कृत के 'अभिज्ञान शंकुतलम' नाटक का अंग्रेजी अनुवाद किया। इस प्रकार ज्ञान की लगन ने एक अंग्रेज को संस्कृत का विद्वान बना दिया।

मोबाइल फोन को चार्ज करने के लिए उसका चार्जर होना बहुत जरूरी है, लेकिन अब चार्जर की छुट्टी होने वाली है। वैज्ञानिक एक ऐसी टीशर्ट इजाद कर रहे हैं जिससे मोबाइल चार्ज किया जा सकेगा।

साउथ केरोलिना यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने इलेक्ट्रीक पावर स्टोर करने का एक अच्छा और सस्ता तरीका ढूंढ निकाला है। प्राजेक्ट प्रमुख जिआडोंग ली ने एक सामान्य टीशर्ट को फ्लोराइड के सॉल्युशन में भिगोया। सुखाने के बाद उसे ऑक्सीजन फ्री एन्वायरमेन्ट में उच्च तापमान पर रखा गया। इसके बाद भी फेब्रिक में कोई परिवर्तन नहीं आया। वो पहले की तरह नर्म और लचीला बना हुआ था। फेब्रिक के टुकड़ों को इलेक्ट्रोड की तरह इस्तेमाल कर शोधकर्ताओं ने पाया कि शर्ट के फाइबर से पॉवर स्टोर किया जा सकता है। करीब हजार बार चार्ज करने के बाद भी इसका परफॉमेंस पाँच फीसदी भी कम नहीं होगा।

इस टीशर्ट में बोरॉन कार्बाइड का उपयोग किया गया है। इसमें लचीले इलेक्ट्रानिक्स, डिसप्ले स्क्रीन तथा मेडिकल डिवाइस भी लगाए गए हैं। साथ ही इसमें एक चार्जिंग सर्किट भी दिया गया है। जिसमें आप अपना मोबाइल रखकर बिना किसी वायर के चार्ज कर सकेंगे। आने वाले समय में यह टीशर्ट आपके हाथों में होगी।

प्रस्तुति : किरण बाला

कहानी : ओमदत्त जोशी

सच्ची मित्रता

मोहनपुरा गाँव से थोड़ी दूरी पर एक नदी बहती थी। नदी बारह माह नहीं बहती थी।

वर्षा के दिनों में यह नदी दूध की तरह उफान लेती लेकिन गर्मी के मौसम में यह सूख जाती। उसके पास बांई ओर एक बड़ का बहुत बड़ा पेड़ था। उसकी शाखाओं, डालियों पर अनेक पक्षियों ने अपना घर बना रखा था। उनमें एक मोर और एक तितली भी थे। इन दोनों में घनिष्ट मित्रता थी। दोनों सैर–सपाटे करते और वापस अपने निवास स्थान बड़ के वृक्ष पर आ जाते।

इस दुनिया में सुख–दुख का जोड़ा है। कभी दुख आता है तो कभी सुख। दुख कभी कहकर नहीं आता। वह तो अचानक आता है। संयोग की बात हुई कि एक दिन जोर से आँधी आयी। अच्छे–अच्छे भारी शरीर वालों के पैर डगमगाने लगे ऐसे में बेचारी तितली की क्या चलती? वह अपने आपको नहीं सम्भाल सकी और नदी में जा पड़ी। नदी का बहाव तेज नहीं था। फिर भी नन्ही जान बहने लगी। उसके पंख कोई काम नहीं कर सके। वह थर–थर काँपने लगी। ऐसी मुसीबत के समय उसने अपने मित्र मोर को पुकारना प्रारम्भ किया।

''मोर दादा! मोर दादा!
देर मत लगा, मत अब ज्यादा।
जल्दी आओ, जल्दी आओ,
पानी से तुम मुझे बचाओ।
नहीं तो मैं मर जाऊँगी,
तुम्हारे साथ नहीं रह पाऊँगी।''

इस समय मोर बड़ के वृक्ष पर बैठा था। अचानक उसने तितली के पुकारने की आवाज सुनायी दी। वह सावधान हो गया। वह नदी के किनारे–किनारे, उड़ता–उड़ता तितली को सम्भालने लगा। उसको एक उपाय सूझा। वह

बड़ का एक पत्ता अपनी चोंच में पकड़कर, जिधर तितली बहती जा रही थी उसके आगे पानी में डाल दिया और बोला– तितली रानी! तुम इस पत्ते पर बैठ जाओ। मैं तुम्हें बचा लूंगा। तितली ने मोर के बताये अनुसार ही किया। वह बड़ के पत्ते पर बैठ गयी। मोर ने वह पत्ता मुंह से पकड़कर नदी से बाहर निकाल दिया। कुछ देर में तितली के पंख सूख गये। वह उड़कर बड़ के पेड़ पर जा बैठी। मोर भी उड़कर उसके पास जा बैठा। दोनों मिलकर बहुत प्रसन्न हुए। यदि मोर सहायता नहीं करता तो तितली पानी में बहती–बहती पता नहीं कहाँ जाती। उसके प्राण पखेरु उड़ जाते। मोर के इस महत्वपूर्ण कार्य से तितली उससे और अधिक घनिष्ठता रखने लगी।

तितली की बहुत इच्छा थी कि वह कभी संकट के समय मोर दादा के काम आये। थोड़े दिनों पश्चात् ऐसा अवसर आ गया। एक दिन उस जंगल में एक शिकारी आया। उसके कंधे पर बन्दूक पड़ी थी। वन में शिकार के लिए उसने खूब भाग–दौड़ की लेकिन एक भी जानवर का शिकार नहीं कर पाया। एक–दो को निशाना भी बनाया लेकिन वे भी भाग छूटे। थककर शिकारी ने नदी में पानी पिया और बड़ की घनी छाया में आराम करने लगा। अपनी थकान को मिटाने के लिए उसने अपने थैले को तकिया बनाकर सीधा लेट गया। सीधे सोने से उसकी नजर वृक्ष पर पड़ी। उसको एक डाली पर मोर दिखाई दिया। शिकारी के मुँह में पानी आ गया। वह सोचने लगा– कहीं, कोई शिकार हाथ नहीं लगा तो क्या हुआ, इस

मोर का ही शिकार का मजा लेंगे। ऐसा विचार कर वह धीरे–धीरे उठा और अपनी बंदूक को हाथ में लेकर मोर की सीध में साधने लगा। यह सब तितली उसके पास ही बैठी–बैठी देख रही थी। वह समझ गयी कि शिकारी मोर का शिकार करना चाहता है। अतः उसने मोर दादा के प्राण बचाने का उपाय सोच लिया। शीघ्र ही तितली शिकारी के आस–पास उड़ने लगी। ज्योंही शिकारी स्थिर हो मोर को निशाना बनाकर गोली चलाने लगा त्योंही तितली उसकी आँख पर जा बैठी। इससे शिकारी तितली को उड़ाने के लिए हिला और गोली चल पड़ी। हिलने से गोली तिरछी निकल गई और मोर दादा बाल–बाल बच गया।

बंदूक की धड़ाम की आवाज से वृक्ष पर बैठे सभी पक्षी चिल्लाते–चिल्लाते उड़ गये। मोर भी वहाँ से कें–कें–कें.... करता उड़ा और दूर जाकर एक नीम के पेड़ पर जा बैठा। तितली भी उसके पीछे–पीछे उड़ती नीम के वृक्ष पर मोर दादा के पास जा बैठी। तितली को देख लम्बी सांस छोड़ता हुआ बोला– आओ तितली रानी! आज तो कोई शिकारी अपने घर पर आक्रमण कर गया। पता नहीं उसने कितने पक्षियों का शिकार किया? भगवान ने तो मेरी रक्षा की जो जान बची लाखों पाये। नहीं तो इस संसार से फुर्र हो जाते।

तितली बोली– ''मोर दादा! बचाने वाला भगवान है। वह शिकारी तो आपको निशाना बना रहा था। आपको नींद आयी हुई थी। मैंने जब यह देखा तो जल्दी ही एक उपाय सूझा। उसने ज्यों ही आप पर गोली का निशाना साधा, त्योंही मैं उसकी खुली हुई आँख पर जा बैठी मुझे हटाने के लिए गरदन हिलायी उसी समय गोली चल गई। इससे वह निशाना चूक गया। यदि मैं सावधानी नहीं रखती तो वह गोली आपको ही लगती..... ।''

मोर बीच में ही बोल गया– ''अरे! रानी तुमने ही मेरे प्राण बचाये। यह बात है क्या? मुझे तो उस समय नींद आ रही थी। कुछ भी ध्यान नहीं था। पक्षियों को अपने शत्रुओं से कितना सावधान रहना पड़ता है? आज तुमने मेरे प्राण बचाये। बहुत प्रशंसनीय कार्य किया है। मैं इसे जन्म–जन्मान्तर तक नहीं भूलूंगा। तुम छोटी हो लेकिन तुमने इतना बड़ा काम किया है जो बड़े–बड़े भी नहीं कर सकते।''

तितली आश्चर्य दर्शाते कहने लगी– ''अरे मोर दादा! आप कैसी बातें करते हो? यह कोई उपकार नहीं है। अपने मित्र की मुसीबत के समय सहायता करना अपना कर्तव्य है। यही सच्ची मित्रता है। मुझे भी वह दिन अच्छी तरह याद है जिस दिन मैं नदी में बहती जा रही थी। आपने किस प्रकार मुझे बहती हुई को बाहर निकाला। इससे ही मैं जीवित रह गयी। नहीं तो बहती–बहती पता नहीं कहाँ जाती?''

मोर बीच में बोल उठा– ''अरे रानी! तुमने मुझे आवाज देकर बुलाया था बचाने के लिए। लेकिन मैं तो सो रहा था। उस समय तुमने मेरा पूरा ध्यान रखा। मेरे जैसे आलसी की रक्षा की। मेरे काम से तुम्हारे कार्य का महत्व अधिक है।''

इस प्रकार की बातें करते–करते, दोनों हँसते–हँसते पुनः अपने वृक्ष पर उड़ते–उड़ते आ गये।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

आज सामने वाले बड़े पार्क में एक पार्टी है। चलो, हम सब भी चलते हैं, खूब खाने को मिलेगा।

नहीं, हमें ऐसे बिना बुलाए किसी की पार्टी में नहीं जाना चाहिए। अच्छा नहीं लगता।

डरपोक चिंटू, तुम दुबककर एक कोने में बैठ जाओ। हम सब तो जाएंगे।
वाह! रसगुल्ले, रसमलाई, नान। वाह! यहाँ तो सब मेरा मनपसंद खाना है।
चलो, जल्दी-जल्दी जुगाड़ लगाते हैं, बढ़िया खाना खाने का।

मिल गया रास्ता। वह रही रसोई। मैं दखेती हूँ वहाँ कोई है या नहीं।
वाह! यहाँ हमारे लिए बहुत सारा खाना है। चलो जल्दी से खाते हैं।
अरे! रसोई में ये खटर-पटर की आवाज़ कैसी? चलो, चल कर देखते हैं।

अरे, हमारी चोरी पकड़ी गई। अब तो मार खानी पड़ेगी!
अरे, क्या हो रहा है यहाँ पर?
भागो! भागो! वे हमें मारने आ रहे हैं। कहीं वो हम तक पहुँच ना जाएँ।
हा! हा! बहादुर किट्टी, खाना खाया या मार? कसरत तो अच्छी हो ही गई भाग-भाग कर। हा! हा! हा!
मुझे माफ करना चिंटू, मैंने तुम्हें डरपोक कहा लेकिन अब मुझे समझ आया कि बिना बुलाए किसी की पार्टी में नहीं जाना चाहिए।

फूल भी खिलते हैं कैक्टस में

लेख : ईलू रानी

कैक्टस रेगिस्तान और जंगलों में उगने वाला पौधा है, इसकी दुनियाभर में 1500 से भी अधिक प्रजातियाँ मौजूद हैं। इसकी 95 प्रतिशत प्रजातियों पर कांटे होते हैं। भिन्न–भिन्न प्रजातियों पर ये कांटे आधा इंच से लेकर 4–5 फुट तक लम्बे भी होते हैं। कुदरत का यह एक ऐसा पौधा है। जो हर मौसम में बिना खाद पानी के भी सदा मुस्कुराता और हरा–भरा दिखाई देता है।

ग्रीक शब्द 'काक्टौस' से बिगड़कर 'कैक्टस' शब्द बना है। ग्रीक भाषा में 'काक्टौस' का अर्थ कांटेदार पौधा होता है। लेकिन कैक्टस में कुछ किस्में ऐसी भी होती हैं जिनमें कांटे नहीं होते।

कैक्टस सिर्फ रेत में ही फलता फलूता है यह आम धारणा है, लेकिन सच्चाई तो यह है कि इसे भी अन्य पौधों के समान सही प्रकार के पोषण की जरूरत पड़ती है। हाँ, अपने अन्दर पानी सोखकर रखने की क्षमता के कारण इसमें बार–बार पानी नहीं डालना पड़ता।

कैक्टस को मोटे तौर पर तीन श्रेणियों में रख सकते हैं। यह है 'ऑपेसिया', 'मामिल्लारी' तथा 'रॉड कैक्टस'। नाग के फन समान चपटे तने वाले कैक्टस 'ऑपेसिया' या 'नागफनी' कहलाते हैं। गेंद की तरह के तने वाले कैक्टस 'मामिल्लारी' कहलाते हैं तथा डंडे की तरह गोल लम्बे तने के कैक्टस 'रॉड कैक्टस' कहलाते हैं।

ऐसा नहीं है कि कैक्टस सिर्फ कांटों वाला पौधा ही है, इसकी कई किस्मों में सुन्दर रंग–बिरंगे फूल भी खिलते हैं। ऑपेसिया कोक्सीनीली फेरा तथा फाप्लो–कैक्टस में लाल रंग के आकर्षक फूल उगते हैं। ऑपेसिया पोलिएन्था तथा नोटो कैक्टस में पीले रंग के सुन्दर फूल लगते हैं।

कैक्टस लगाने के लिए इसका 4–5 इंच का तना काटकर 3–4 दिन हवा लगने देनी चाहिए। उसके बाद जमीन या गमले में लगाकर उसमें थोड़ा–सा पानी दे दे। कुछ दिनों बाद इसमें जड़ फूट आएगी। इस पौधे की खूबी यह है कि इसे खुले आंगन, बरामदे, चौंक इत्यादि में लगाने के अलावा घर के अन्दर कमरों में भी रखा जा सकता है। इसमें बार–बार पानी नहीं डालना पड़ता। अतः इसकी मिट्टी में मच्छर होने का खतरा भी नहीं रहता।

अफ्रीका के जंगलों में पाये जाने वाले कैक्टस के पौधों की लम्बाई 30 फुट तक होती है। इनमें 4–5 फुट लम्बे नुकीले कांटे नीचे ऊपर तक लगे रहते हैं। देखने में ये पेड़ बड़े अजूबे होते हैं।

दक्षिण अमेरिका में 8–10 फुट लम्बे कैक्टस के ऐसे पौधे हैं, जिनका तना खून की तरह लाल रहता है। इस तने से प्राकृतिक लाल रंग का निर्माण भी किया जाता है।

कविता : कमलसिंह चौहान

वर्षा जल

चुन्नू मुन्नू गुड़िया रानी,
बरस रहा है ठंडा पानी।
पानी गिरा और चेहरे खिले,
वर्षा में नहीं करो नादानी।।

सरिता गीता रोहित आये,
सिर पर छाते खोले आये।
छपक–छपक कर चलते देखो,
चारों तरफ है गिरता पानी।।

झील सरोवर नदियां भर गईं,
हरियाली से धरती सज गई।
झींगुर दादुर पपीहा बोले,
मछली करती है मनमानी।।

कितनी सुन्दर वर्षा रानी,
सबको भाती लगे सुहानी।
पशु पक्षी भी मस्त हुए हैं,
वर्षा ऋतु की यही कहानी।।

आलेख : किरण बाला

रोबोट पुलिस

मुमकिन है कि अगले कुछ सालों में अमेरिका की सड़कों पर ड्यूटी करते, गाड़ियों की चेकिंग करते, ट्रैफिक नियंत्रित करते और चोर उचक्कों की धरपकड़ करते रोबोकॉप नजर आएं।

फलोरिडा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक इन दिनों ऐसे रोबोट बनाने की कोशिश में जुटे हैं जो पुलिस अफसरों की तरह दबंग हों। इन रोबोट का संचालन उन पुलिस वालों के हाथ में होगा जो चोटिल या विकलांग होने के चलते असमय सेवानिवृत्त हुए या फिर वो अनुभवी अफसर जो शहरों में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए बतौर वॉलेटिंयर काम करेंगे। वैज्ञानिकों का मानना है कि इस तरह के रोबोट जल्द ही दुनियाभर के देशों की जरूरत होंगे। इनकी खासियत ये भी है कि जो कार्य हाड़–मांस के असल पुलिस अफसर नहीं कर पाते, ये वह भी करने की कोशिश करेंगे।

अमेरिका के नेवी रिजर्व से जुड़े कमांडर जेरमी राबिंस निजी रूप से इस प्रोजेक्ट में रुचि ले रहे हैं। वे कहते हैं, ऐसे बहुत से पुलिस अफसर हैं जो देश की सेवा करने के लिए पुलिस में भर्ती हुए लेकिन विकलांगता या दूसरे कारणों से उन्हें नौकरी छोड़नी पड़ी। रोबोकॉप उन लोगों को फिर से पुलिस व्यवस्था से जोड़ेगा। प्रयोगशाला में बनी रोबोट पुलिस सड़कों पर पहरा देगी, आपात फोन कॉल पर उचित कार्रवाई करेगी, नियम तोड़ने वालों पर जुर्माना लगाएगी और परमाणु ऊर्जा संयंत्रों जैसी संवेदनशील जगहों पर निगरानी रखेगी।

राबिंस के मुताबिक, इस परियोजना का सबसे मुश्किल काम इन रोबोकॉप के चेहरे को डिजाइन करना है, क्योंकि हम चाहते हैं कि वो असल पुलिस वालों की तरह दबंग और मुस्तैद दिखाई दें। साथ ही उनके चेहरे पर एक रोबीली मुस्कान हो ताकि पांच साल का बच्चा भी उनसे मदद मांगने में न झिझके।

प्रेरक प्रसंग : गौरी शंकर कुमार

जीवटता

दक्षिण ध्रुव की खोज अभियान को जीवन समर्पित कर देने वाले सर राबर्ट स्कॉट की डायरी, उनके बाद में जाने वाले खोजी दल के हाथ लगी। डायरी को पढ़कर स्कॉट महोदय के अदम्य साहस और अद्‌भुत जीवन का पता चलता है। डायरी के शब्दों में– 'यहाँ भयंकर शीत है और हमारे शरीर इतने क्षीण हो चुके हैं कि हमारा यह अभियान भी अपूर्ण ही रहेगा। वापिस लौट सकने की क्षमता भी हम में नहीं है। फिर भी हम परम प्रसन्न हैं। हमें अपने सौभाग्य पर गर्व है। हम अपने तम्बू में मनमोहक गीत गाते हैं, चंचल और स्वछन्द चिड़ियों की तरह चहकते हैं, हमें आनन्द ही आनन्द है।

बाल कहानी : राजेश अरोड़ा

जीवन-मूल्य

उर्विल नौवीं में पढ़ता था। वह धनी पिता का इकलौता बेटा था। इस कारण स्वभाव से वह घमण्डी हो गया था। बातों ही बातों में वह अपमान कर देता। उसकी इस आदत से सभी दोस्त परेशान थे।

अंगद, उर्विल का सहपाठी था। उसका स्वभाव बहुत अच्छा था। वह सबसे स्नेह और नम्रता का व्यवहार करता था।

एक दिन कक्षा में हिन्दी के अध्यापक ने बच्चों को बाज़ार से एक नया लेख–पत्र लाने के लिए कहा। स्कूल की जब छुट्टी हुई तो घर लौटते समय अंगद ने उर्विल से कहा– 'उर्विल! शाम को जब तुम लेख–पत्र लेने बाज़ार जाओ तो मुझे भी बुला लेना। मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा।'

यह सुनते ही उर्विल घमण्ड से बोला– 'अरे... चल–चल! तू क्या नया लेख–पत्र खरीदेगा? मांग–मांग कर तो पुस्तकें पढ़ता है। अरे....तेरी माँ दूसरों के घरों में काम करती है और तेरा बाप सारा दिन दूसरों का बोझा ढोता है। बाज़ार से कुछ खरीदना तेरे वश की बात नहीं है। रहने दे...।

यह सुनकर भी अंगद नम्रता से ही बोला– 'देख उर्विल! तू चाहे तो मुझे कुछ भी कह ले, पर मेरे माँ–बाप का इस तरह अपमान मत कर। मैं अपने माँ–बाप की बहुत इज्जत करता हूँ।

''कहूंगा! तू क्या कर लेगा मेरा?'' उर्विल गुस्से से बोला। इस पर अंगद को भी गुस्सा आ गया और उसने उर्विल की पिटाई कर दी।

अगले दिन उर्विल ने गुरुजी से अंगद की शिकायत की। गुरुजी ने अंगद को बुलाकर पूछा– ''अंगद! तुमने उर्विल की पिटाई की?''

अंगद बोला– ''हाँ, गुरुजी।''

''क्यों?''

''गुरुजी! उर्विल ने मेरे माँ–बाप को बहुत ही बुरा–भला कहा, जिससे मुझे गुस्सा आ गया और मैंने.....।''

कारण जानकर गुरुजी ने पहले तो अंगद को डांट पिलायी फिर उर्विल को समझाते हुए वे प्यार से बोले– ''देखो बेटा! ठंडा जल, चन्दन का रस अथवा शीतल छाया भी मनुष्य के लिए उतनी आह्लादजनक नहीं होती जितनी मीठी वाणी।

इसलिए वाणी का तप करो बेटा! वाणी के तप का बड़ा महत्व है।''

फिर गुरुजी ने वाणी का तप समझाया– ''बेटा...! वाणी के तप से तात्पर्य है– विवेक और संयम से बोलना, सत्यवचन बोलना, मृदुवचन बोलना और ऐसे शब्द न बोलना जिससे दूसरे का मन दुखे और सुनने वाला व्यथित हो जाए। यही वाणी का तप है। अपने वचन पर अडिग रहना भी वाणी का तप है। इसलिए खूब सोच–विचारकर बोलना चाहिए। हमारे जीवन में अक्सर कई ऐसे अवसर आते हैं, जब हमें 'हाँ' या 'ना' कहना होता है। इन साधारण से दिखने वाले दो शब्दों में ही वचन की अडिगता और जीवन की सत्यता छिपी हुई है। किसी के खाने के लिए पूछने पर यदि हमने मना कर दिया तो मना ही होनी चाहिए। यह नहीं कि अधिक आग्रह करने पर हम खाने पर बैठ जाएं, तो इससे वाणी का तप भंग हो जाता है। वाणी के तप से जीवन के हर क्षेत्र में सफलता मिलती है और वह सभी का प्रिय और चहेता बन जाता है।'' गुरुजी के समझाने का उर्विल पर कुछ असर न पड़ा। वह वैसा ही अकड़ू बना रहा।

एक बार स्कूल की ओर से बच्चों के लिए पिकनिक का आयोजन हो रहा था। यह सुनकर बच्चों की खुशी का ठिकाना न रहा। उर्विल ने भी पिकनिक के लिए खुशी–खुशी अपना नाम लिखवाया।

निश्चित समय पर बस पिकनिक स्थल की ओर रवाना हुई। पिकनिक स्थल पर्वतों की तलहटी में था। पर्वतों में बल खाती सड़क पर बस सरपट दौड़ रही थी। उमड़ती–घुमड़ती घनघोर–घटाएं, सुरम्य घाटियां, रंग–बिरंगे फूलों से लदी क्यारियां, हरे–भरे वृक्ष, लहलहाती लताएं, चारों ओर आच्छादित हरियाली, झर–झर करते झरने देख बच्चे खुशी से तालियां बजाते, उछलकूद करने लगे।

गुरुजी ने बच्चों से कहा– ''बच्चों! अपने शरीर का कोई अंग खिड़की से बाहर नहीं निकालना। और पिकनिक स्थान पर कोई बच्चा कहीं अकेला नहीं जाएगा। ठीक है?''

उत्साहित होकर बच्चे बोले– ''जी गुरुजी।''

अपनी यात्रा पूरी कर बस गंतव्य स्थान पर पहुँच गई। बस से उतरकर बच्चे हरी–हरी दूब में अठखेलियां करने लगे। उर्विल जब बस से उतरा तो अचानक उसकी नजर सामने एक निर्झर पर पड़ी। कल–कल, छल–छल करते निर्झर निर्मल नीर से एक संगीत प्रवाहित हो रहा था। जिज्ञासावश वह उस ओर चल पड़ा। झील का मनोरम दृश्य देख वह मंत्र–मुग्ध रह गया। उसकी झील में नहाने की इच्छा हुई। वह मस्ती में नहाने लगा। अचानक उर्विल फिसलकर एक गड्ढे में जा गिरा और गहरे पानी में गोते खाने लगा। वह चिल्लाया– ''बचाओ, बचाओ!''

सब बच्चे अपने खेल में व्यस्त थे। अंगद यूं ही घूम फिर रहा था कि उसे यह आवाज सुनाई पड़ी। वह उस ओर दौड़ा। वहाँ पहुँचकर उसने देखा कि उर्विल गहरे पानी में गोते खा रहा है। उसने 'आव देखा न ताव' झट झील में कूद पड़ा। और उसे बड़ी मुश्किल से खींचकर किनारे तक ले आया। उसके पेट का पानी निकाला। कुछ देर बाद उर्विल को होश आ गया। सामने अंगद को देख, उसका सिर शर्म से झुक गया। आँखें छलक आईं। वह कुछ न बोला। बस! बच्चों में शामिल होकर खेलने लगा।

अगले दिन स्कूल में उर्विल अपने किसी दोस्त से बात करता तो उसके चेहरे पर मुस्कान और वाणी में मिठास होती। वह प्रत्येक से स्नेह भरा व्यवहार करता। गुरुजन और अपने से बड़ों का मान–सम्मान करता। गरीब बच्चों की मदद करता। उसमें आए इस परिवर्तन को देख सभी हैरान रह गए थे लेकिन अंगद मन ही मन खुश था क्योंकि उसकी वजह से उसके एक दोस्त में जीवन–मूल्य जाग उठे थे। और इन जीवन–मूल्यों से वह एक ही दिन में सारे स्कूल की आँख का तारा बन गया था।

कविता : गफूर 'स्नेही'

बादल आए झूम के

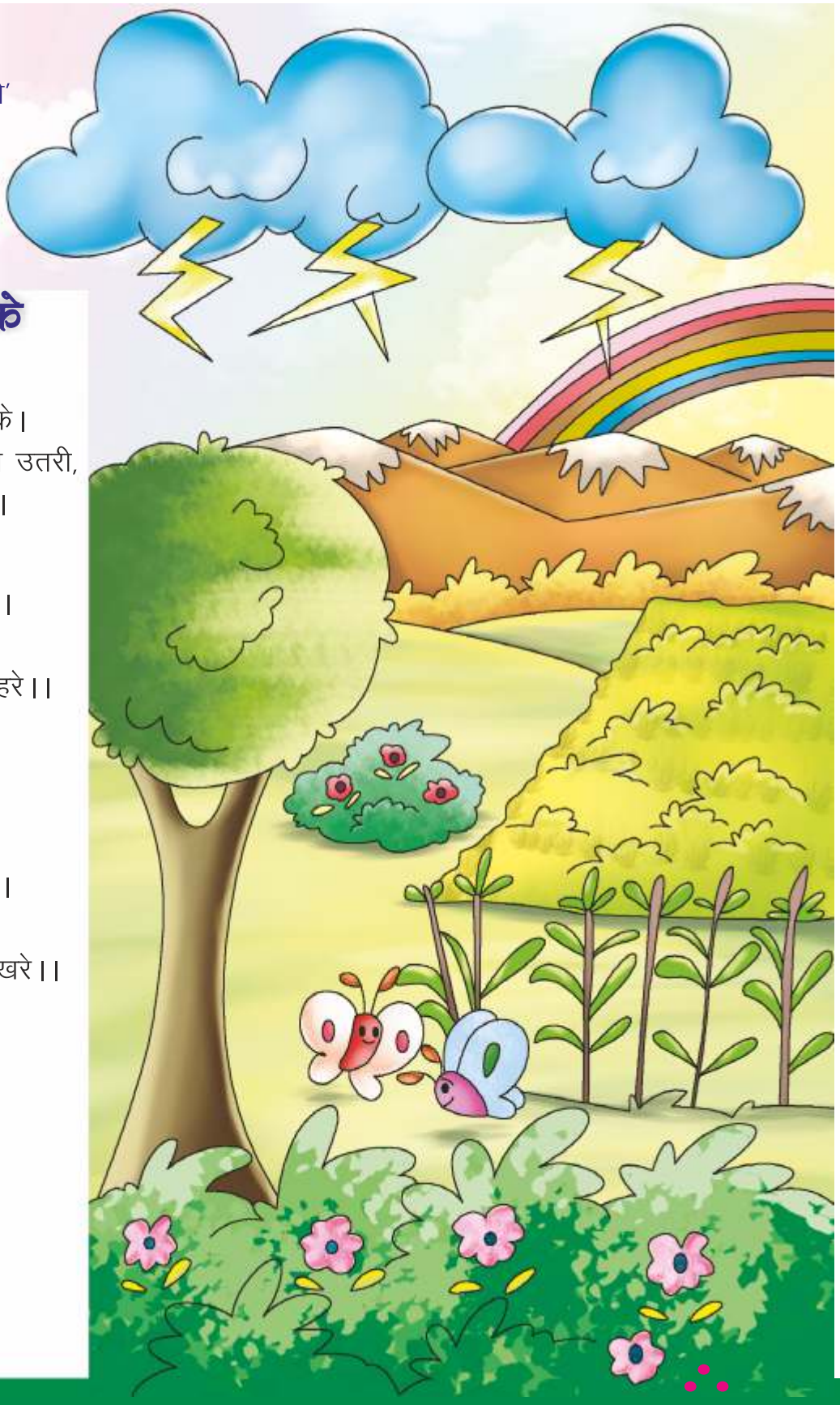

बादल आए झूम के,
डौल डौल और घूम के।
कड़की चमकी बिजली उतरी,
गई धरा को चूम के।।

गड़गड़ बादल गरजे,
इन्द्रधनुषी झालर सजे।
बूंदों के मोती बिखरे,
छुअन से तन मन सिहरे।।

दीद हुए मशरूम के,
बादल आए झूम के।

खेत बाग जंगल हरे,
नदी ताल सब ही भरे।
उठती पानी में लहरें,
चांदी भी न इतनी निखरे।।

फसलें दाने लूम के,
बादल आए झूम के।

रोज रोज त्योहार है,
तितली भौंरे बहार है।
लक्ष्मी खोले द्वार है,
कुबेर भरे भंडार है।।

क्षण है बूम बूम के,
बादल आए झूम के।

पढ़ो और हँसो

एक बार एक लड़के से उसके घर आये एक सज्जन ने पूछा– बताओ बेटा, अगर मैं तुम्हारे पिता को 10,000 रुपये 10 प्रतिशत वार्षिक दर पर ब्याज पर दूँ तो वे एक साल मुझे कितना देंगे?

लड़का : कुछ नहीं।

सज्जन: इसका मतलब तुम सवाल नहीं जानते।

लड़का : नहीं, आप मेरे पिताजी को नहीं जानते।

♣ ♣ ♣

संवाद्दाता : भारी वर्षा के कारण चिनाव नदी का पानी खतरे के निशान के पास पहुँच गया है लेकिन डरने की कोई बात नहीं है खतरे के निशान को और ऊपर कर दिया गया है।

♣ ♣ ♣

राहुल : (बहन अदिति से) आजकल मेरी जिन्दगी में सबकुछ उल्टा चल रहा है।

अदिति : लेकिन भइया, मुझे तो आप हमेशा ही सीधे चलते हुए दिखाई पड़ते हैं।

– निशा चौधरी (रठाना कैम्प)

डॉक्टर : (राजन का चेकअप करने के बाद, राजन से) चिन्ता की कोई बात नहीं है। तुम बस दिल खोलकर हँसा करो।

राजन : डॉक्टर साहब! लोगों को मुँह खोलकर हँसते हुए तो देखा है। मैंने किसी को दिल खोलकर हँसते नहीं देखा।

♣ ♣ ♣

बस कंडक्टर सवारियों की गिनती करते हुए– यात्रियों, बस में कोई दो सवारी अभी तक बिना टिकट हैं, कृपया अपना टिकट लें लें।

कंडक्टर के पास बैठा यात्री– सर, इस बस में आप और ड्राइवर साहब दो ही लोग तो बिना टिकट हैं।

♣ ♣ ♣

अध्यापक : (छात्र से) भाईचारे का वाक्य में प्रयोग करो।

छात्र : मैंने दूधवाले को पूछा कि दूध इतना महँगा क्यों बेचते हो तो वह बोला– भाई चारा जो महँगा हो गया है।

– आलोक सक्सेना (दिल्ली)

मालकिन : रामू आज तुमने बहुत कीमती फूलदान तोड़ दिया। आज के बाद ऐसी गलती की तो मार–मार के सिर गंजा कर दूँगी। समझे?

रामू : जी समझ गया।

मालकिन : क्या समझे?

रामू : यही कि मालिक भी किसी ऐसी ही गलती का अंजाम भुगत रहे हैं।

♣ ♣ ♣

गुड़िया : (अमन से) भैया मैं आइसक्रीम खाऊँगी।

अमन : गुड़िया, सर्दियों में ठण्डी चीज नहीं खाते हैं।

गुड़िया : भैया, मैं आइसक्रीम को गर्म करके खा लूँगी।

♣ ♣ ♣

पिता : बेटे, तुम इतिहास में फेल क्यों हुए।

बेटा : क्या करता पिताजी! सभी प्रश्न उस समय के थे जब मैं पैदा ही नहीं हुआ था।

♣ ♣ ♣

पति : (पत्नी से) सुबह–सुबह कहाँ जा रही हो?

पत्नी : पड़ोसन से झगड़ा करने।

पति : कल तो झगड़ा करके आई थी।

पत्नी : कल 'सेमी फाइनल' था आज 'फाइनल' है।

♣ ♣ ♣

माँ : बेटे, जरा देखना तो दूध उबलकर बाहर तो नहीं आ रहा?

बेटा : माँ आप चिन्ता ना करो मैंने रसोईघर के दरवाजे बन्द करके कुण्डी लगा दी है।

– प्रतीक्षा कुशवाहा (इटावा)

टीचर : (पप्पू से) बस के ड्राइवर और कंडक्टर के बीच क्या फर्क है?

पप्पू : कंडक्टर सोया तो किसी का टिकट नहीं कटेगा और ड्राइवर सोया तो.... सबका टिकट कट जायेगा।

♣ ♣ ♣

विजय : (मेहमान से) और काजू लीजिये ना ..

मेहमान : नहीं शुक्रिया, मैं पहले ही 5–6 खा चुका हूँ।

विजय : खाये तो आपने 11 हैं, गिन कौन रहा है?

♣ ♣ ♣

एक बच्चे की कलाई पर घड़ी देखकर एक व्यक्ति ने पूछा– क्या यह घड़ी समय बताती है?

बच्चे ने मासूमियत से जवाब दिया– जी नहीं अंकल, मुझे देखकर पता लगाना पड़ता है?

♣ ♣ ♣

एक लड़के की शादी हो रही थी। विवाह की एक रस्म में लड़के से पंडित जी ने कहा– कहो कि "मैं अपना सबकुछ अपनी अर्द्धांगिनी को समर्पित करता हूँ।"

यह सुनते ही पास बैठे उसका दोस्त बोला– लो, आज बेचारे की साइकिल भी चली गई।

– गुरचरन आनन्द (लुधियाना)

जन्म दिन मुबारक

आराधक (दिल्ली)

हिय्या (दिल्ली)

नवजोत कौर (दिल्ली)

समदिश (चण्डीगढ़)

यक्षिता (नगीना)

सताक्षी (फतेहगढ़)

मानसी (ब्यासपुर)

प्रीसा (मण्डी डबवाली)

विवान (चण्डीगढ़)

अनुराग (अमरावती)

अरमान (सीधी)

सिमरत सिंह (तलवंडी)

आराध्या (सुपौर जमुआ)

भाविका (सिवनी)

रणवीर सिंह (दिल्ली)

सीरत (दिल्ली)

ऋद्धिमा (रामपुराफूल)

आशिमा (सुन्दर चक)

चेतन (नेजा डेला)

अनुष्का (दिल्ली)

दिवित (जम्मू)

मयंक (सुपौर जमुआ)

अर्णव सिंह (फतेहगढ़।

शुभनित (करमाला)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो भेज सकते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का फोटो इस पते पर भेजें।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्पलेक्स,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9

फोटो के पीछे यह कूपनं चिपकाना अनिवार्य है।

नाम.....जन्म माह.....वर्ष.....

पता .....

.....

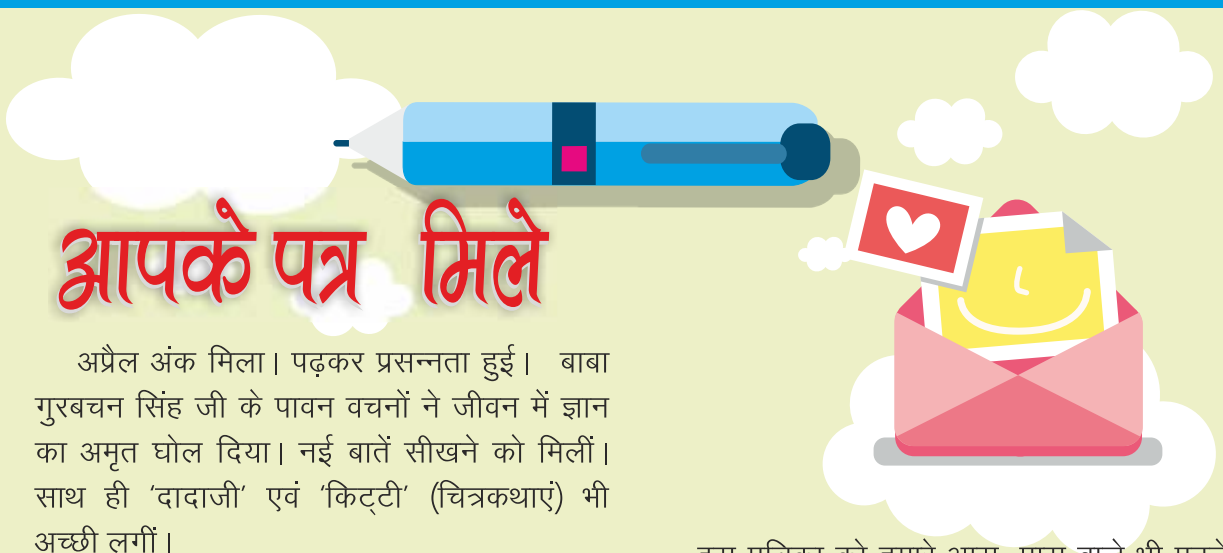

आपके पत्र मिले

अप्रैल अंक मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। बाबा गुरबचन सिंह जी के पावन वचनों ने जीवन में ज्ञान का अमृत घोल दिया। नई बातें सीखने को मिलीं। साथ ही 'दादाजी' एवं 'किट्टी' (चित्रकथाएं) भी अच्छी लगीं।

इसके अलावा प्रेरक–प्रसंग शिक्षाप्रद एवं कविताएँ भी रोचक थीं।

इस अंक में 'पढ़ो और हँसो' भी काफी हास्यमय लगे।

– राकेश बलेचा (गोंदिया)

हँसती दुनिया का अप्रैल अंक मिला। मैंने इसे हर बार की तरह बड़ी लगन से पढ़ा। इसमें प्रकाशित 'अन्न का आदर करें (जैकी दुल्हानी), 'दूसरे का भरोसा मत करो' (गौरी शंकर कुमार) आदि कहानियां इसमें प्रकाशित पसन्द आईं।

'जीवन क्या है?' (नेहा नागपाल) 'पौधे' एवं 'प्रार्थना' (गफूर स्नेही) कविताएं काफी अच्छी लगीं। सभी स्तम्भ ज्ञानवर्द्धक होते हैं।

हँसती दुनिया बच्चों का उचित मार्गदर्शन एवं ज्ञान में वृद्धि करती है।

– सौरभ कुमार गुप्ता (माधोपुर)

मैं हँसती दुनिया पत्रिका का काफी पुराना सदस्य हूँ। इस पत्रिका का हमें बड़ी बेसबरी से इन्तजार रहता है। मार्च अंक प्राप्त हुआ इसमें प्रकाशित कहानी 'चुनमुन की चतुराई' (राजकुमार जैन 'राजन') अच्छी लगी।

कविताएं 'आगे ही बढ़ते जाएंगे' (नवीन चतुर्वेदी) एवं 'निडर थे भगतसिंह' प्रेरणास्पद लगीं।

इसके अलावा सभी स्तम्भ भी अच्छे लगे।

इस पत्रिका को हमारे आस–पास वाले भी पढ़ने के लिये ले जाते हैं और वे भी इस पत्रिका से ज्ञान की बातें सीखते हैं।

सद्गुरु के चरणों में अरदास है कि यह पत्रिका दिन दूनी तरक्की करती रहे।

– मीनाक्षी आनन्द (कानपुर)

मैं हँसती दुनिया काफी समय से पढ़ता आ रहा हूँ। इसमें दी जाने वाली सामग्री वास्तव में ही बड़ी रोचक होती है। इसमें प्रकाशित सभी रचनाएं मन को लुभाने वाली होती हैं। हँसती दुनिया वाकई हमारी पारिवारिक पत्रिका है।

– बलतेज कोमल (घग्गा)

वर्ग पहेली के उत्तर

1 बु	■	2 लो	क	3 स	भा
4 आ	5 जा	दी	■	त्यें	■
■	पा	■	6 पं	द्र	ह
7 मि	न	ट	■	ना	■
स्र	■	■	8 मं	थ	9 रा
■	10 शि	लां	ग	■	व
11 नीं	व	■	12 ल	क्ष्म	ण

मई अंक का रंग भरो परिणाम

प्रथम :

निधि रावत
आयु 15 वर्ष
अंजलि मेडिकल, अगस्त्यमुनि,
जिला : रुद्रप्रयाग (उत्तराखण्ड))

द्वितीय :

चाहत शर्मा
आयु 14 वर्ष
गाँव : काहरु, पोस्ट : धर्मशाला महन्ता,
जिला : काँगड़ा (हि.प्र.)

तृतीय :

लवलीन आहूजा
आयु 11 वर्ष
म.नं. 1409/3, फेस – 11,
मोहाली (पंजाब)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसंद किया गया वे हैं–

खुशी शाक्या (महावीर नगर, भरथना),
निष्ठा छाबड़ा (जयपुर),
सहज (करनाल),
संजिता आहूजा (हापुड़),
हिमांशु (शिवाजी नगर, गुड़गाँव),
हिमांशु (कलसाना),
खुशी राणा (अगस्त्यमुनि),
मनमय संतवानी, मिष्ठी संतवानी
(सिन्धी कालोनी, खण्डवा),
असीम (मालवीय नगर, दिल्ली),
प्रिया पटेल (उमरगांव, वलसाड),
तनिष्क गोपानी, सलोनी गोपानी
(सिन्धी कालोनी, खण्डवा),
अनीता रानी (डी.एम. कालोनी, चण्डीगढ),
समीका वाधवानी (पुणे),
भूमिका कुमारी (मोहाली),
चिन्मय (राम नगर, गोंदिया), स्नेहा (जीन्द),
पलक सैनी (पीरगढ़, अमरोहा),
पारुल सिंह (मर्का रोड, बांदा),
पलक वर्मा (से. 52, चण्डीगढ़),
वैभव किशोर (डांगोली बांगर),
विधिता लूथरा (रामपुर मनीहारन),
साहिल (13 एम.डी., मण्डी घड़साना),
सतुंष्ट नंदा (सूरतगढ़),
निहारिका (फेस–11, मोहाली)।

जुलाई अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर **20 जुलाई तक कार्यालय** 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009 को भेज दें।

तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों (प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय) के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) सितम्बर अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

इसमें 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

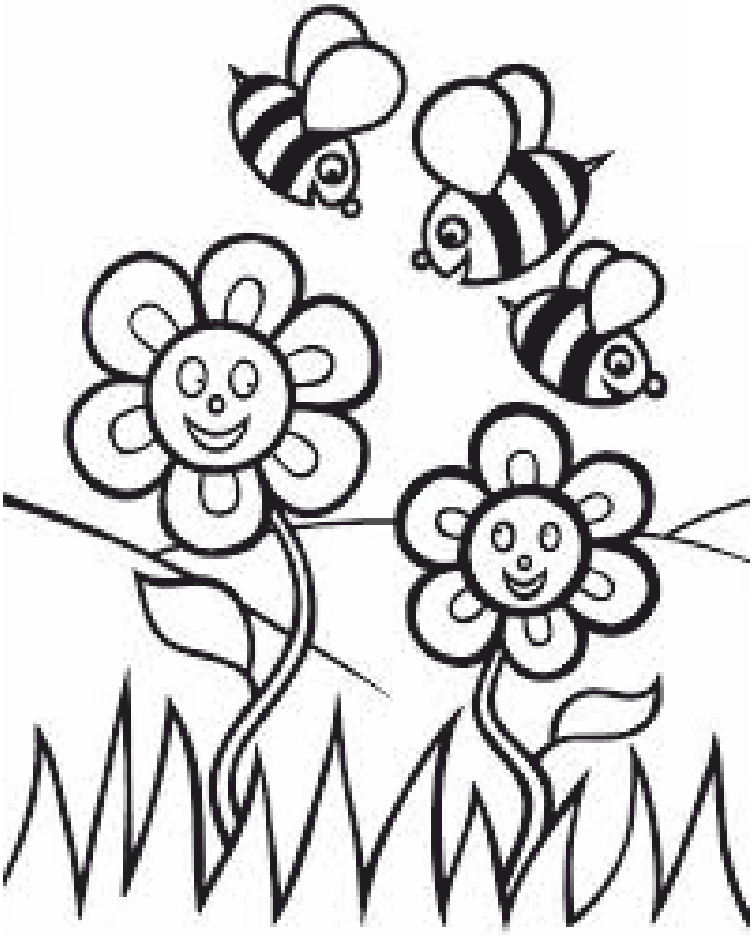

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

चित्र पहेली

▪ चाँद मोहम्मद घोसी

हरे–भरे वृक्ष की डाल पर बैठे सुंदर पक्षी का चित्र एक से 42 तक के बिन्दू मिलाकर बनाओ और उसमें सुंदर रग भरो।

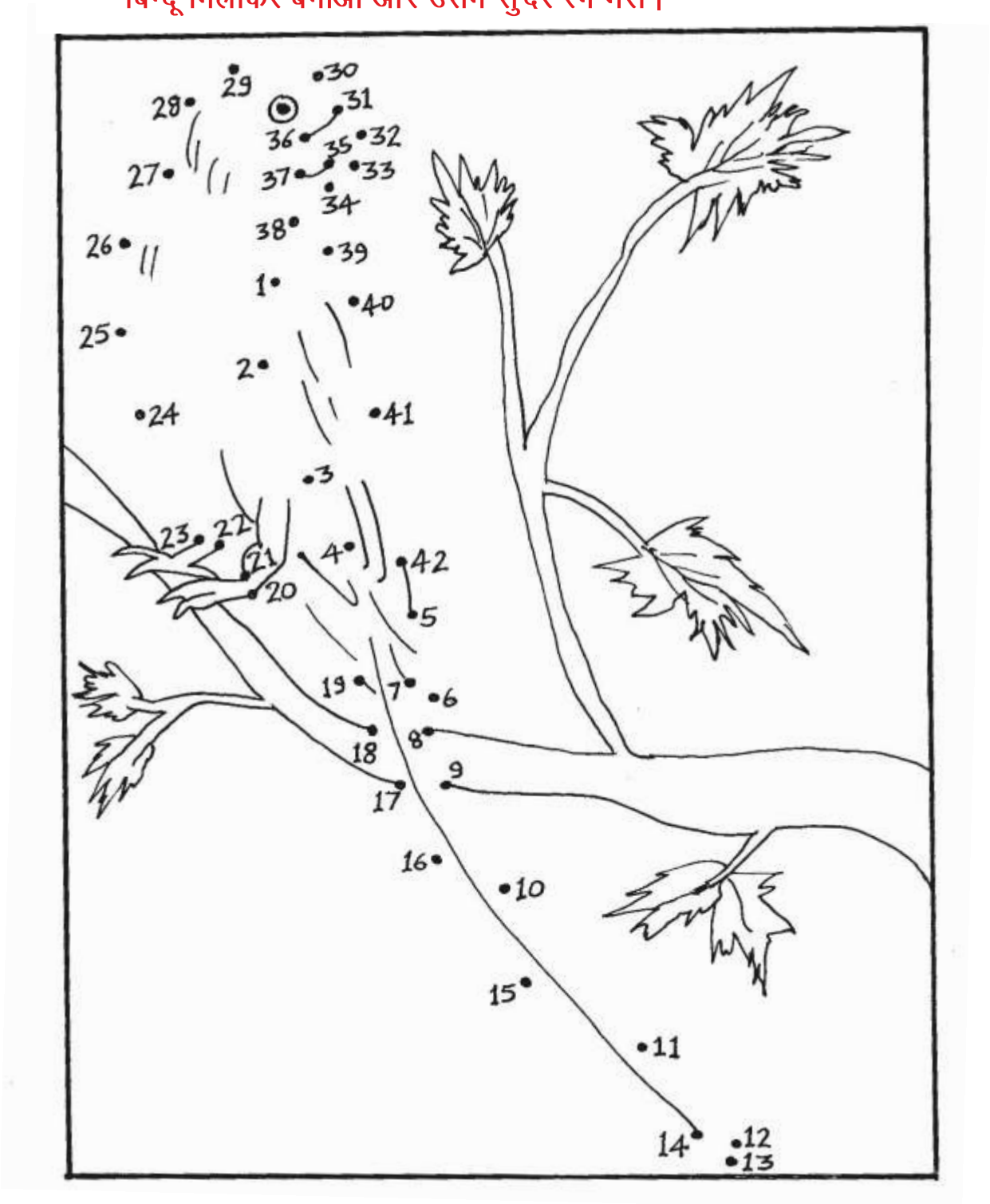

Service with Humility

SANT NIRANKARI CHARITABLE FOUNDATION

ANNOUNCES

NIRANKARI INSTITUTE OF

music and arts

Courses offered Dance, Vocal and Instrumental:

- Vocal (Classical)
- Vocal (Light)
- Harmonium
- Keyboard
- Guitar
- Tabla

Affiliated to
Prayag Sangeet Samiti, Allahabad

Sant Nirankari Public School, Nirankari Colony
Email: nvc@nirankarifoundation.org
Website: www.nirankarifoundation.org

Follow us:

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
Registrar of Newspaper : Licence No. U (DN)-23/2015-17
For India Under RNI No. 25672/73 : Licenced to post without Pre-payment

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning
with exciting and fun features
highlights our mission's message.
Visit regularly to watch tiny tots
excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share
your talent
in form of
painting, poetry
& story

Posted at IMBC/1 Prescribed dates 21th & 22nd. Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)